धृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

Regd. No. 58414/94

स्वामी रामानन्द जी द्वारा संचालित

हमारी साधना

त्रैमासिक

वर्ष 30 • अंक 4 • अक्तूबर-दिसम्बर 2023

मूल्य रु. 25/-

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती॥

करुणामयी सुमित्रा माँ

हमारी साधना

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग्भवेत्।।
न त्वहं कामये राज्यम्, न स्वर्गं नापुनर्भवम्।
कामये दुःखतप्तानां, प्राणिनामार्ति नाशनम्।।

वर्ष : 30 अक्तूबर-दिसम्बर 2023 अंक : 4

भजन

मोकों नाम भलो है भाई।
खोजन जाऊँ कहाँ हरि को हौं पावत अति कठिनाई।
सफल न भई जुगुति मम एकहु सिगरी बयस बिताई।।
जोग जग्य व्रत नेम करत जे हारे ध्यान लगाई।
ते पुनि सुगति लही बारक कहि राम नाम चित लाई।।
अतिसय सुखद सरल सुमिरन में नहिं कछु परति कमाई।
पावन करति पतित कहँ पल में पातक पुंज जराई।।
रामसरन भव भीर दूरि करि हरि सों देति मिलाई।
अजामील गनिका गजादि ने अस परतीति दृढ़ाई।।

भजन संख्या 8 **- स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'**

प्रकाशक
साधना परिवार
स्वामी रामानन्द साधना धाम,
संन्यास रोड, कनखल,
हरिद्वार-249408
फोन: 01334-311821
मोबाइल: 08273494285

सम्पादिका
श्रीमती रमना सेखड़ी
995, शिवाजी स्ट्रीट,
आर्य समाज रोड
करोल बाग,
नई दिल्ली-110005
मोबाइल: 09711499298

उप-सम्पादक
श्री रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'
1018, महागुन मैंशन-1,
इन्दिरापुरम,
गाजियाबाद-201014
ई-मेल: rcgupta1018@gmail.com
मोबाइल: 09818385001

विषय सूची

क्र.सं.	विषय	रचयिता	पृ.सं.
1.	चित्र – करुणामयी सुमित्रा माँ		2
2.	भजन	स्व. श्री सूर्यप्रसाद शुक्ल जी 'रामसरन'	3
3.	सम्पादकीय		5
4.	भजन – ओ मेरे जीवन की नैया के नाविक		6
5.	भजन – कलियों में राम मेरा किरणों में राम है		6
6.	भजन – गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है		7
7.	भजन – तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा		7
8.	गीता विमर्श – धारावाहिक	स्वामी रामानन्द जी	8-10
9.	गुरु वाणी – धारावाहिक		11
10.	Letters to Seekers – धारावाहिक		12-14
11.	भागवत के मोती – धारावाहिक		15
12.	पूज्य साहू जी का जीवन चरित्र – पंचम भाग	अनिल चन्द्र मित्तल	16-18
13.	श्री सुरेन्द्र बाबाजी – श्रद्धांजलि		19-21
14.	कानपुर साधना शिविर-2023 – विवरण व प्रवचन सार		22-27
15.	साधना का सच्चा लक्ष्य	हरि प्रकाश सिंह चौहान	27
16.	बीसलपुर साधना शिविर-2023 – विवरण व प्रवचन सार		28-33
17.	तप की महिमा	रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'	34-37
18.	मनुष्य की वाणी ही सर्वशक्तिशाली है		37
19.	स्वकल्याणी बनाम परकल्याणी		38
20.	दानदाताओं की सूची		39-40
21.	शोक समाचार		40
22.	श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य		41
23.	दिसम्बर 2023 में साधना-धाम में होने वाले कार्यक्रम – सूचना		42
24.	स्वामी रामानन्द तपस्थली, दिगोली – पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस समारोह – सूचना		43
25.	पूज्य गुरुदेव का जन्म दिवस समारोह एवं शिविर – निमन्त्रण		44

Printed and Published by Shri Dinesh Bahl for and on behalf of Swami Ramanand Sadhna Pariwar, Sadhna Dham, Sanyasa Road, KANKHAL-Haridwar (Uttarakhand) and printed at Rakmo Press Pvt. Ltd., C-59, Okhla Industrial Area Phase-I, New Delhi-110020.

सम्पादकीय

हमारी साधना के सभी पाठकों को जय श्रीराम!

जगद्गुरु शंकराचार्य ने कहा है –

कलत्रं धनं पुत्रपौत्रादि सर्वं गृहं बान्धवाः सर्वमेतद्धि जातम्।
मनश्चेन्न लग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम्॥

अर्थात् पत्नी, धन, पुत्र-पौत्र, घर एवं स्वजन आदि पूर्व जन्म के फल-स्वरूप सहज-सुलभ हों लेकिन गुरु के श्रीचरणों में मन की लगन न हो तो इन सभी प्रारब्ध सुख का कोई महत्त्व नहीं होता है। एक सन्त के वचनानुसार गुरु की आज्ञा का पालन शत-प्रतिशत होना आवश्यक है। यदि कोई शिष्य 10 में से 9 निर्देशों का पालन भी कर रहा है तो वह सच्चा शिष्य कहलाने का अधिकारी नहीं है। इस दृष्टि से हम सबको आत्म निरीक्षण करने की आवश्यकता है कि क्या हमने गुरुदेव द्वारा निर्देशित सेवा, प्रेम और समर्पण के मार्ग को अपनाया है? क्या हम नियम से ध्यान करते हैं? क्या हमने अपना पूरा जीवन साधनामय बनाया है? क्या हम गीता व रामायण का कुछ अंश नियम पूर्वक पढ़ते हैं – आदि आदि।

उपरोक्त मानदण्ड के अनुसार हमारे गुरुदेव के एक सच्चे शिष्य, जो सुरेन्द्र बाबाजी के नाम से जाने जाते थे, दिनांक 4 नवम्बर 2023 को 86 वर्ष की अवस्था में अमेरिका में अपनी नश्वर देह को त्याग कर गुरु चरणों में लीन हो गये जिससे समस्त साधना परिवार में शोक की लहर छा गई। बाबाजी ने किस प्रकार गुरुदेव की साधना प्रणाली का पाश्चात्य देशों में प्रचार-प्रसार किया इसकी विस्तृत जानकारी पत्रिका में दी जा रही है।

इसके अतिरिक्त कानपुर शिविर और बीसलपुर शिविर का विवरण तथा हमारी साधना पद्धति के अनुरूप कुछ लेख, दिसम्बर माह में होने वाले कार्यक्रम व कुछ भजन भी देखने को मिलेंगे। सुधी पाठकों ने ध्यान दिया होगा कि पहले से चल रहे स्थायी स्तम्भों जैसे गीता विमर्श का एक अंश, शुभ और अशुभ समाचार, दानदाताओं की सूची, साधना धाम हरिद्वार में उपलब्ध साहित्य की सूची के साथ पिछले कुछ अंकों से नये स्थायी स्तम्भ भी जोड़े गये हैं, जैसे साधना परिवार की विभूतियाँ, गुरुवाणी, अंग्रेजी में "Letters to Seekers" का एक अंश तथा भागवत के मोती। ये सब नये स्थायी स्तम्भ हाल में ही जोड़े गये हैं।

पाठकों से अपेक्षा है कि इन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करें तथा पत्रिका में सुधार के लिये अन्य सुझाव भी भेजें। इसके अतिरिक्त हमारी साधना पद्धति के अनुरूप नवीन मौलिक रचनायें भी आमन्त्रित हैं जिसके लिये mail-id और whatsapp नम्बर नीचे दिये गये हैं।

mail-id: rcgupta1018@gmail.com

mobile number: 9818385001, अथवा 9711499298, 9582891643

ओ मेरे जीवन की नैया के नाविक

ओ मेरे जीवन की नैया के नाविक
छोड़ो नहीं पतवार गुरुवर छोड़ो नहीं पतवार।

रह रह के नैया भँवर बीच डोले
आता है अंधड़ तूफान।
अंधा मुसाफिर नहीं देख पाता
आँसू भरा आसमान गुरुवर आँसू भरा आसमान।

जीवन की नैया में साथी न कोई
दे दो हमें तुम सहारा।
ओ मेरे नाविक मुझे पार कर दो
छूटे ना हम से किनारा॥

वर दो हमें कि यहाँ से हमारा
हो जाए बेड़ा पार गुरुवर हो जाए बेड़ा पार।

इतना सही है कि नादान हैं हम
लेकिन हैं बच्चे तुम्हारे।
हमको भरोसा यही है कि गुरुवर
रक्षक तुम्हीं हो हमारे॥

लेता रहूँ रात दिन नाम तेरा
जीवन को लूँ मैं सँवार
गुरुवर जीवन को लूँ मैं सँवार॥

कलियों में राम मेरा किरणों में राम है

कलियों में राम मेरा किरणों में राम है।
धरती गगन में मेरे प्रभुजी का धाम है॥

वही डाल डाल में है वही पात पात में।
रहता है राम मेरा सब ही के साथ में॥

जहाँ नहीं रहता ऐसा नहीं कोई धाम है।
धरती गगन में मेरे प्रभुजी का धाम है॥

प्रभु की ही धूप छाया प्रभु की ही चाँदनी।
लहरों के ऊपर मेरे प्रभु ही की रागिनी॥

मेरा रोम रोम जिसको करता प्रणाम है।
धरती गगन में मेरे प्रभुजी का धाम है॥

जिसका सहारा नहीं उसको सहारा देवे।
दीन हीन पतितों को अपना बना लेवे॥

पतित पावन प्रभु दीनबंधु नाम है।
धरती गगन में मेरे प्रभुजी का धाम है॥

गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है

गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है।
जब कृपा करी तुम ने हम पर दीदार तुम्हारा पाया है॥

है पास न कुछ पूजा के लिये
स्वीकार करो ये दो आँसू।
यह भेंट है इस दीवाने की
यह फूल चढ़ाने आया है॥
गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है।

नहिं काम है मुझको दुनिया से
नहिं तेरी दुनिया वालों से।
यह सेवक तज सब दुनिया को
तुमको अपनाने आया है॥
गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है।

अज़मा कर देखा दुनिया को
वहाँ कोई नहीं अपना पाया।
गुरुदेव तुम्हारे बिन जग में
हर ओर अँधेरा छाया है॥
गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है।

अब तज कर सारी दुनिया को
मैं तुमको अपना बना बैठा।
गर चीर के दास का दिल देखो
नस नस में तू ही समाया है॥
गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर इक प्रेम पुजारी आया है।

तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा

तू तो डूबा हुआ भी तर जाएगा।
मुख से राम राम राम राम गाए जा॥

बन्दे ना कर किसी की बुराई।
कौन देगा तेरी झूठी गवाही॥
ओ तेरा जीवन व्यर्थ चला जाएगा
मुख से राम राम राम राम गाए जा।

पशु तो मर कर भी सौ काम आए
नर तन यूँ ही भस्म हो जाए।
ओ तेरा नामो निशां मिट जाएगा
मुख से राम राम राम राम गाए जा।

तूने पहना मानुष का चोला
क्यों ना मुख से तू राम नाम बोला।
ओ प्रभु पूछेंगे क्या बतलाएगा
मुख से राम राम राम राम गाए जा॥

झूठी दुनिया से कर ले किनारा
ये तो मतलब का है जग सारा।
कहना संतों का मान तर जाएगा
मुख से राम राम राम राम गाए जा॥

गीता विमर्श

श्रीमद्भगवद्गीता पंचमोऽध्याय

(गतांक से आगे)

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः॥25॥

'पाप रहित हुए ऋषि लोग, संशय रहित हुए, संयतात्मा वाले, सब भूतों के हित में लगे हुए, ब्रह्मनिर्वाण को लाभ करते हैं'॥25॥

इस प्रकार से साधना करने वाले, ब्रह्मनिर्वाण को प्राप्त करते हैं। कैसी अवस्था होती है उनकी, भीतर तथा बाहर से? कब वह निर्वाण लाभ करने योग्य होते हैं? इसी का उत्तर हमें इस श्लोक में मिलता है। पूर्व श्लोक में जो वर्णन है उसी को पूरा करते हैं वर्तमान तथा आगामी श्लोक। यह उस ज्ञानी की स्थिति है जो निर्वाण के योग्य हैं।

ऋषयः – ऋषि लोग। जिन्हें सूक्ष्म तत्त्वों का बोध हुआ है, जिन्हें अलौकिक दृष्टि प्राप्त हो गई है वे ऋषि हैं।

जब वे **'क्षीणकल्मष'** – पाप रहित हो जाते हैं। ब्रह्म-लीन होने से पहिले सभी पाप-संस्कारों को क्षीण करना आवश्यक है। जो उधार हमने प्रकृति से लिया है, जो दूसरों के प्रति राग-द्वेष मूलक देनदारियाँ हैं वह सभी चुकाकर ही प्रवेश पाया जा सकता है, अन्यथा वे ही व्यक्ति को बाँधने वाली बन जाती हैं। न केवल प्रारब्ध को क्षीण करना होगा, सञ्चित को भी समाप्त कर डालना होगा। एक ही जन्म में यह कैसे सम्भव है? यह पूछा जा सकता है। संस्कार का क्षय सूक्ष्म स्तरों में भी तो हो सकता है। साधक ज्यों-ज्यों मार्ग पर अग्रसर होता है उसकी गति तीव्र होती जाती है। संस्कार भी तीव्रता से क्षीण होते हैं योग्यतानुसार, स्थूल तथा सूक्ष्म स्तरों में। इस प्रकार अनेक जन्मों का काम एक जन्म में निबटाया जा सकता है। यह काम हमें ही समाप्त करना होगा। उसकी समाप्ति के साथ-साथ ही हम अनेक आवश्यक पाठ भी तो पढ़ जाते है। यदि कोई दूसरा हमारी जगह भुगतान करे तो वे पाठ हम न पढ़ पायेंगे। वास्तव में वह हमें लाभ न होगा, हमारे लिए हानि होगी। जीवन में सुख-दुःख तो आते ही हैं। संस्कारों के क्षीण करने में भी आते हैं। वे सदा अस्थायी होते हैं। उनसे घबराना क्यों? उनके बिना आगे भी तो नहीं बढ़ा जा सकता।

जब व्यक्ति बिल्कुल निर्मल हो जाता है, संस्कार-रहित हो जाता है, आरपारदर्शी शीशे की भाँति हो जाता है, तब ही वह निर्गुण में लीन हो पाता है। निर्गुण होकर ही निर्गुण में लीन हुआ जा सकता है।

दूसरा विशेषण है **'छिन्नद्वैधा'** – संशयरहित, मति की स्थिरता और भीतर की ज्योति – जगी हुई ऊँची चेतना – जो वस्तुस्थिति का निश्चयात्मक बोध दे सकती है – व्यक्ति को संशयरहित कर देती है। संशय अज्ञान से होता है, निम्न प्रकृति के द्वारा पर्दा पड़ जाने पर होता है। संस्कारों की प्रबल गति से यह होता है। अतः क्षीण-कल्मष होता हुआ साधक संशयरहित भी हो जाता है। इस स्थिति में शान्ति है और बड़ा बल है। ऐसी अवस्था में व्यक्ति का ज्ञान पक्का और संकल्प सिद्ध होने लगता है। वास्तव में ज्ञान ही व्यक्ति को संशयरहित कर सकता है। इसी के आधार पर सच्ची निष्ठा और सच्ची परायणता आती है। श्रेय-प्रेय का झंझट समाप्त हो जाता है। कर्त्तव्याकर्त्तव्य का झंझट मिट जाता है, पाप-पुण्य का झमेला समाप्त हो जाता है। व्यक्ति जीवन के मार्ग पर निश्चिन्तता अनुभव करता

हुआ कदम बढ़ा सकता है। उसे रास्ता दीखता है और सारे विधान के पीछे प्रभु का मंगलमय सूत्र दीखता है।

'यतात्मा' – वश में है जिसकी आत्मा। इस विषय में ऊपर भी लिखा गया है। अपने तन, मन, तथा बुद्धि पर, इन्द्रियों पर, पूरा अधिकार प्राप्त हो जाना आवश्यक है। जो मिथ्यात्व के आधार पर असंयम में रत रहते हैं, वे वाचा वेदान्ती धोखा ही तो देते हैं अपने को। पूर्णाधिकार लाभ किये बिना, न मन में स्थिरता होगी न बुद्धि में। व्यक्ति खिलवाड़ बन जाता है निम्न प्रकृति के लिए, ब्रह्मलीन होना तो दूर की बात रही। ज्ञान के मार्ग में इस बात की आवश्यकता अनिवार्य है।

और अन्त में **'सर्वभूतहिते रताः'** – भूतमात्र के हित में लगा हुआ। ज्ञानी से – ज्ञानमार्ग का अवलम्बन लेने वाले से – यह मांग अजीब लगती है। वे तो संसार से विरक्त हैं। वह तो एकान्त चाहता है किसी गिरि गुहा का, भला वह क्या लोकहित साधेगा? कर्म तो बन्धन का कारण है उसके लिए। गीता में तो कर्म को ज्ञानमार्ग का भी संगी बना दिया गया है। यह पाँचवा अध्याय इसी प्रयोजन को सिद्ध करता प्रतीत होता है।

छठे श्लोक में कहा, बिना कर्मयोग के संन्यास प्राप्त करना कठिन है। योगयुक्त होने पर – कर्मयोग में लग जाने पर जल्दी ही ब्रह्मप्राप्ति होती है। कर्म करता हुआ ज्ञानी क्या धारणा रखे सो 8वें श्लोक में कह दी। नौवाँ तथा दसवाँ श्लोक इस प्रकार कर्मों का ब्रह्म में आधान बताते हैं। भक्त अपने तरीके से समर्पण करता है, यह अपने तरीके से होता है। 11वाँ श्लोक स्पष्ट ही कहता है – आत्मशुद्धि के लिए कर्म किया जाता है। योगी लोग ऐसा करते ही हैं।

इस विवेचन से यह स्पष्ट है कि वर्तमान अध्याय ज्ञान की निष्ठा वालों को कर्म करते हुए कर्म के संन्यास का मार्ग बताता है। कर्म तो उन्हें भी करना होगा। क्योंकि कर्म करने से नितान्त छुट्टी असम्भव है। कर्म तो करना ही होता है। दूसरा, आत्म-शुद्धि के निमित्त भी कर्म किया जा सकता है। ज्ञानी को भी कर्म के बन्धन को क्षीण करने के लिए उपाय की आवश्यकता है।

कहा जा सकता है कि ज्ञान ही कर्मों को क्षीण कर देता है। परन्तु तब, जब वह जग जाए। वह जब तक जगेगा नहीं, कर्मों का, संस्कारों का पर्याप्त मात्रा में क्षय नहीं होता। यह तो चक्कर है। अतः मार्ग तो चाहिए। कर्म-संन्यासयोग निर्गुणोपासकों के लिए कर्म का रास्ता बताता है।

अब हम समझ सकते हैं कि भगवान् ने **'सर्वभूतहिते रताः'** क्यों कहा? साधनावस्था में संन्यास मार्ग का अवलम्बन लेने वाला कर्म करेगा आत्म-शुद्धि के लिए। निर्मल होने पर आत्म-शुद्धि के लिए कर्म करने की आवश्यकता नहीं रहती। पर कर्म तो स्वभाव बन जाता है। कर्म रहता ही है, कर्म में बन्धन नहीं रहता। तो ऐसी स्थिति में कर्म क्योंकर होता है? वह कर्म लोक-कल्याण के निमित्त होता है। दूसरों का हितसाधन ही एकमात्र लक्ष्य रह जाता है। जो भीतर की समस्थिति है, उसमें तो सभी एक बराबर हो जाते हैं। अतः सभी का कल्याण ही कर्म का लक्ष्य हो जाता है।

यदि भीतर ज्ञान की निष्ठा है तो कर्म के द्वारा बन्धन कैसा? यदि वह निष्ठा है तो छोड़ना कैसा और पकड़ना कैसा? कर्म तो प्रकृति का धर्म है

आत्मा न करता है, न छोड़ता है। अतः कर्म के बाह्य संन्यास का प्रश्न तो सांख्य-योगी के लिए भी उपस्थित नहीं होता। जो कर्म को छोड़ना चाहता है, वह वस्तुस्थिति को जानता नहीं।

बारहवें अध्याय के चतुर्थ श्लोक में कहा –

संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥4॥

सभी विशेषण पिछले श्लोकों में आ गए हैं। निर्गुणोपासक किस प्रकार से सिद्धि लाभ करते हैं, यह

हमें सूक्ष्मरूप से एक ही श्लोक में मिल जाता है। पाँचवें अध्याय में ऊपर खोलकर वर्णन किया गया है। अभी एक और श्लोक इसी विषय में है।

कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्॥26॥

'उन यतियों के लिए जिन्होंने अपने चित्त को साध लिया है, जो काम तथा क्रोध से रहित हो गये हैं और जिन्होंने अपने को जाना है, चारों ओर ब्रह्मनिर्वाण ही है'॥26॥

'उनके लिये चारों ओर ब्रह्मनिर्वाण ही है' इसका अर्थ? चारों ओर ब्रह्म ही है, ऐसा ही क्यों नहीं कह दिया? ब्रह्म तो सभी के चारों ओर है। उनके लिए ब्रह्मनिर्वाण चारों ओर है। ब्रह्मनिर्वाण है ब्रह्मलय का भाव, वह ऊँची चेतना जिसमें व्यक्ति ब्रह्मभूत हुआ उसमें लीन होता है। वह उसकी चेतना को अपने में और दूसरों में अनुभव करता है सदैव, अर्थात् वह ब्राह्मी-स्थिति में रहता है और उसी परमतत्व को चारों ओर अनुभव करता है। उसी में लीन रहता है। जीते जी ही उनकी यह स्थिति है। मृत्यु से कुछ कमती या बढ़ती नहीं हो सकती।

ऐसे सिद्धों की स्थिति का और वर्णन किया है।

'कामक्रोधवियुक्तानाम्' काम तथा क्रोध से जिनका वियोग हो गया, जो इनसे रहित है। संयम की स्थिति में विकार की सत्ता रहती है। वियोग भी तो वस्तु के होने पर होता है। जब विकार हो ही नहीं तो संयम कैसा? कुछ भी हो। ज्ञान का दृष्टिकोण स्पष्ट है। विकार प्रकृतिगत है। इसका होना प्रकृति का धर्म है। हम इससे न्यारे हैं और हमारा न्यारापन बना रह सके।* तोतापुरी की कहानी याद आती है। वेदान्त की शिक्षा परमहंस को उन्हीं से प्राप्त हुई थी। 'रोग शरीर का धर्म है, मैं आत्मा हूँ, इससे अछूता हूँ।' वैसी स्थिति में रह सकूं। यही लक्ष्य है।

'यति' संयमी को कहते हैं, जो तपस्वी हो। जिसने तन तथा मन को कसा हो। बाह्य संयम की ओर अधिक संकेत होता है 'यति' शब्द में। एकान्तवास, अल्पवस्त्र, अल्पाहार आदि यति की तस्वीर बनाते हैं। इसीलिए कहना पड़ा **'यतचेतसाम्'।** जिन लोगों ने काया को ही नहीं कसा बल्कि मन, बुद्धि आदि का भी मर्दन किया है, इन्हें वश में किया है।

वह सुन्दर स्थिति है जिसमें हम अपने कोषों के पूरे-पूरे स्वामी हों। सूक्ष्म तथा स्थूल सभी गतियों पर हमारा पूरा अधिकार हो। इससे भी ऊँची स्थिति है जब कभी सभी कोष इस तरह से रंग जाएं ऊँची चेतना से कि वह सहज स्वभाव से ही उसकी अभिव्यक्ति के सुश्लिष्ट यन्त्र बन जायें। संयम का प्रश्न ही न रह जाये।

यहीं पर अन्तर है ज्ञानमार्ग तथा भक्त के दृष्टिकोण का। भक्त तो अपनी प्रकृति का भी समर्पण करता है प्रभु के चरणों में। संयम की समस्या नहीं रहती। रूपान्तर होता है प्रकृति का। जैसे भगवान् विशुद्ध सत्त्व में स्थित हैं, वैसे ही भक्त हो जाता है। रजस्-तमस् का संस्पर्श नगण्य हो जाता है। ज्ञानी प्रकृति से केवलीभाव लाभ करता है। प्रकृति पर अधिकार चाहता है, केवलीभाव लाभ करने के लिए और उसे बनाए रखने के लिए। जितना प्रकृति में रूपान्तर होता है वह स्वत: ही होता होगा।

(क्रमश:)

*तोतापुरी जी श्रीरामकृष्ण परमहंस जी के गुरु थे।

गुरु वाणी

यह आत्मा शक्तिमय, ज्ञानमय, आनन्दमय और परम मंगलमय है। बारम्बार इस प्रकार की भावना करने से अन्तःकरण में नवीन शक्ति का उद्भव होता है जो व्यक्ति के कार्यों में परिलक्षित होती है। सभी दोषों को निर्मूल करने के लिए श्री राम का नाम दृढ़ निश्चय और धैर्य से जपने योग्य है। सतत स्मरण का विशेष अभ्यास करणीय है। (पत्र 61)

❖ ❖ ❖

जिस प्रकार पुरुषोत्तम राम समस्त असुरों का वध करने में समर्थ हैं उसी प्रकार उनका नाम भी। आपको अनन्त शक्ति का आवाहन करके प्रातः और सायंकाल उसका चिन्तन करना चाहिए। दिन में भी उसके सान्निध्य का चिन्तन होना चाहिए। (पत्र 61)

❖ ❖ ❖

हम दूसरों में प्रीति के अंकुर पैदा कर सकते हैं और कालान्तर में महान् परिवर्तन भी। इतनी अनासक्ति, इतनी तटस्थता आवश्यक ही है। अन्यथा व्यक्ति स्वयं दुःखी होता है और दूसरों को भी दुःखी करता है। (पत्र 62)

❖ ❖ ❖

आपके जीवन में यज्ञ-पुरुष के पूजन का भाव, सेवा का भाव रम जाये। कहाँ पर आप कितने उपयोगी हो सकते हैं - यह भाव आपके मन में उदय हुआ करे और आपका जीवन, अपने लिए, अपने परिवार के लिए उपयोगी हो जिनका आपसे वास्ता पड़ता है। व्यक्तिगत भाव को गौण करके दूसरों के हित कल्याण के भाव से विचारना और उस विचार को कार्यरूप में परिणत करना - यह ऐसे जीवन का रहस्य है। यह सुख है और हमें आध्यात्मिक सुख की ओर बड़ी तीव्रता से ले जाता है। (पत्र 63)

❖ ❖ ❖

कर्मयोगी का लक्षण ही है कि वह अकुशल कर्म से द्वेष नहीं करता और कुशल कर्म में आसक्ति नहीं होती। सभी कर्म वह भली प्रकार से करता है - यही आदर्श उसके सामने रहता है। (पत्र 69)

❖ ❖ ❖

Letters to Seekers

Letter No. 14 : Shri Ram : Chitai, Almora.

15.09.1944

My dear .....,

Yours to hand yesterday. There is another letter of the 29th with me at present. That letter was detained unduly somewhere and reached me just a couple of days back.

As to – illness, I have never despaired. Watch the effect of Ignatia or any other remedy that Dr. Sircar administers. Follow his instructions as regards diet as well. You may reduce her diet if you like and if she feels inclined.

You may ask her to take warm bath in the morning followed immediately by cold bath. This will help to sooth her nerves. If you can arrange for a warm tub bath, she may have it for 15 mts. to half an hour, finish with a cool bath. It is necessary to cover the head with a towel wet with very cold water during bath. This will probably help to overcome the recent emotional disturbances that have affected her adversely.

Now about the Gita (your letter of the 7th instant), I apprehended that you may miss my meaning when I wrote out the introductory comments, but I was neither in the place nor mood to write them or add additional comments. However, the third chapter is called कर्म योग (Karama Yoga) and fourth कर्म संन्यास (Karama Sanyaasa). The fourth one deals with the कर्म संन्यास (Karama Sanyaasa) aspect of कर्म योग (Karama Yoga) and how this is affected through ज्ञान (Gyana). कर्म संन्यास (Karama Sanyaasa) is the real renunciation of actions which is freedom from their effects hereafter, the cause of bondage. In other words, how कर्म योगी (Karama Yogi) gets beyond the binding effects of Karma is the subject matter of the Chapter. किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः is the central sloka of the chapter. How Yajna helps to its attainment is the related question. I hope now my comment will be plain to you.

(If you read the above alongwith my previous letters, I hope, you will be able to understand the importance of all the three properly.)

The Lord has cited Himself as an instance of a man of action escaping bondage – a Karama Yogi being a Karama-Sanyaasi. This is the bridge that I referred to. Refer to the text, please, sl. 13, 14 etc.

Now about spirits. The subject has fascinated me since years and I have studied literature on the subject and know certain facts otherwise even. What proof is there to say that physical existence is all that is there? And there is no wonder that the space around us to be filled with existence of a different order.... But why fear them? Mostly they are harmless beings, and those that can harm, dare not affect those who have the will even of the order that you possess. Ramanand is another guarantee of immunity from such influences.

But it does not mean that there are no fiends (satan) and that blind superstition has done no harm to India. No doubt most cases are merely hysteria and not actual possession. But for those who know actual possessions can be more readily cured of their hysteria. Ghost stories told to children are really very harmful. There is no reason to fear a ghost more than the living person. The ghost is at a disadvantage in not possessing a physical form. In fact fear is the greatest ghost. Positive suggestions, a little of patient disinterested observation will drive the fear off.

Believe me, with name ringing within you, you can face the mightiest of devils that can be imagined. Such a potency is there in the name.

I have laid the truth bare before you. You may believe or not, as you please.

I shall give a Hindi translation of slokas dealt with in future. Will it not be better that you give me the slokas, and your question when you have any?

About yourself, look to your positive side. All your shortcomings and weaknesses will go away duly in course of time. They may cause a little disturbance – a sort of aggravation, be it merely on the mental plane, before they take leave for ever like the foreign matter in the course of nature-cure treatment. Look to your positive side, refuse to attend to your weaker side. That is necessary. Take shelter in the Lord, His name and have faith.

With best wishes.

Yours in the Lord,

Ramanand

❖ ❖ ❖

Letter No. 15 : Shri Ram : P.O. Chitai, Almora.

20.09.1944

My dear .....,

I have received both of your letters dated the 16th. I have also received the writing pads. Many thanks.

Do as much of jap as you can during the remaining Navaratra days. You have also read those points of the Ramayana which appeal to you. We are having evening Satsang as well at this place. The Navanha of Ramayan is going on. Akhand Japs will be held, probably there.

With reference to Aurobindo, my answer implied certain things. Has Aurobindo himself anywhere said that the Descent in him has gone to the greatest possible limit and there is no more scope at all. I think he has never made such an assertion. What would not the disciples make of their master? I hesitate to ascribe infallibility to Aurobindo, though in the particular instance cited, his statement about the countries at war does not seem to be wrong, (let aside

what his followers infer).

As to..... you have laid before me your limitations. Perhaps you realize now that the perfect conduct is not to be actualised in life in a day. The nature's process in this matter is slow and painful, but necessary at the same time. The knocks of the kindly mother-nature teach the lessons gradually. You are on the road. The only practical and hence advisable course is to go ahead, but be willingly prepared for the possible consequences. That is also part of Nature's process.

To be plain, try your best to set yourself right as far as you can. Propose no drastic changes until you have the strength to stand them and they are prompted from within. Take the knocks of nature to be factors in your evolution. Depend upon the Kindly Father for strength and light. Be not impatient. Do what lies in your hands – as much of Sadhna as you can. This is my prescription for you. Look within, pray to Him and try to follow the inner promptings. May the Lord be with you.

Now about Tulsi Ramayana. All that seems fanciful in Ramayana sinks into insignificance before the really valuable part of it. I do not read it as history. I look upon it as a symbolical text. Rama is Purshottama. Lakshman is an individual soul. Sita is Mahashakti, Bharata is a master Bhakta, Ravana is Moha, and so on. Such clues are scattered throughout the Ramayana. How an aspirant may advance towards the Descent of the Purshottama in Ayodhya – his inner consciousness, is very well depicted. To say the least, I feel much moved. The charitra of Bharata, and of Rama himself are really wonderful; I see in them super-human play. If you look upon the Ramayana with this vision, it will appear as a valuable text. I would again press over certain things which are not very clear or even objectionable, e.g. the great respect for Brahmanas by birth, शूद्र ढोर गंवार पशु नारी and so many more सन्त हँस गुन गहहिं पय, तजिहि Sift out what is really valuable, another text in Hindi which will equal the Tulsi Ramayana, I do not know.

These are the battles which the Divine plays to come back to Ayodhya. I similarly look upon the Bhagwat. His lila, his exile, his fight with Kansa etc. are symbolical. There may be historical background, but what have we to do with it. We have our point of view which pays.

I hope you will feel interested in the text now. This much of introduction for the present. More when I feel like writing about the Ramayana. What about your Gita class?

Hope you are all well.

Yours in the Lord,

Ramanand

P.S. If you refer your difficulties to me in the Ramayana, I shall try to help you very gladly.

❖ ❖ ❖

भागवत के मोती

इस वर्ष के अप्रैल अंक से पत्रिका में श्रीमद्भागवत के चुने हुए सन्देश छपने आरम्भ हुए हैं। इस अंक में प्रस्तुत है इन सन्देशों की तीसरी कड़ी –

11. जिन सन्त पुरुषों ने सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण का अपने आत्मा और स्वामी के रूप में साक्षात्कार कर लिया हो, उनसे प्रेम और सभी प्रकार के प्राणियों की सेवा, विशेषकर मनुष्यों की, मनुष्यों में भी परोपकारी सज्जनों की और उनमें भी भगवत् प्रेमी सन्तों की करना सीखें।

(भागवत 11.3.29)

12. भगवान् के परम पावन यश के सम्बन्ध में ही एक-दूसरे से बातचीत करना और इस प्रकार के साधकों का इकट्ठे होकर आपस में प्रेम करना, आपस में सन्तुष्ट रहना और प्रपंच से निवृत्त होकर आपस में ही आध्यात्मिक शान्ति का अनुभव करना सीखें।

(भागवत 11.3.30)

(गीता अध्याय 10 श्लोक 9 की पुनरावृत्ति)

13. श्रीकृष्ण राशि-राशि पापों को एक क्षण में भस्म कर देते हैं। सब उन्हीं का स्मरण करें और एक-दूसरे को स्मरण करावें। इस प्रकार साधन-भक्ति का अनुष्ठान करते-करते प्रेम-भक्ति का उदय हो जाता है और वे प्रेमोद्रेक से पुलकित-शरीर धारण करते हैं।

(भागवत 11.3.31)

(गीता अध्याय 10 श्लोक 10 की पुनरावृत्ति)

14. जो इस प्रकार भागवत धर्मों की शिक्षा ग्रहण करता है, उसे उनके द्वारा प्रेम-भक्ति की प्राप्ति हो जाती है और वह भगवान् नारायण के परायण होकर उस माया को अनायास ही पार कर जाता है, जिसके पंजे से निकलना बहुत ही कठिन है।

(भागवत 11.3.33)

(गीता अध्याय 7 श्लोक 14 की पुनरावृत्ति)

15. जब भगवान् कमलनाभ के चरणकमलों को प्राप्त करने की इच्छा से तीव्र भक्ति की जाती है तब वह भक्ति ही अग्नि की भाँति गुण और कर्मों से उत्पन्न हुए चित्त के सारे मलों को जला डालती है। जब चित्त शुद्ध हो जाता है, तब आत्मतत्त्व का साक्षात्कार हो जाता है – जैसे नेत्रों के निर्विकार हो जाने पर सूर्य के प्रकाश की प्रत्यक्ष अनुभूति होने लगती है।

(भागवत 11.3.40)

पूज्य साहू जी का जीवन चरित्र

पंचम भाग

गुरुदेव महाराज की प्रेरणा से साधना परिवार की प्रमुख विभूतियों को 'हमारी साधना' के माध्यम से प्रकाशित करने का कार्य वर्ष 2022 के अंक 4 से आरम्भ किया गया था जिसमें सर्वप्रथम साहू काशीनाथ जी के विषय में जो भी जानकारी उपलब्ध हो पाई वह लगातार 4 अंकों में प्रकाशित की जा चुकी है। इस अंक में प्रस्तुत है साहू काशीनाथ जी के साधना परिवार से सम्बन्ध रखने वाले कुछ अन्य संस्मरण। इन घटनाओं को प्रकाश में लाने का उद्देश्य मात्र इतना है कि नये साधक गुरुदेव की महत्ता को समझ सकें।

ये संस्मरण भी पूर्व की भाँति पूज्य साहू जी के सुपुत्र श्री अनिल चन्द्र मित्तल की लेखनी द्वारा लिखे गये हैं। चूँकि ये सभी घटनायें बहुत पुरानी हैं और श्री मित्तल जी द्वारा अन्य लोगों से सुनी गई बातों पर आधारित हैं; इसलिये समय, स्थान अथवा पात्रों के नाम आदि में त्रुटियाँ होने की सम्भावना है जिसे जानकार पाठकगण क्षमा करेंगे। उद्देश्य तो है गुरुदेव से सम्बन्धित घटनाओं को जीवित रखना, जिससे कि वे भूतकाल के गर्त में दबकर लुप्त न हो जायें।

1. पूज्य गुरुदेव जब बीसलपुर आते तो साहू (काशीनाथ) जी के साथ सायंकाल में स्टेशन रोड वाले बगीचे में सैर के लिये चले जाते थे और उनके साथ बड़े भाई कृष्ण चन्द्र व बहन कान्ता भी अपने मित्रों के साथ बगीचे में पहुँच जाते थे। उन बालकों में मिलकर गुरुदेव बच्चे बनकर वही खेल खेलने लग जाते थे जो वे खेलते थे, जिसमें कई बार उनको चोट भी लग जाती थी। उनके पूरे शरीर में शक्ति जैसे कूट-कूट कर भरी हुई थी, थकान तो होती ही न थी।

वे लाल सेब की तरह बिलकुल लाल थे जैसे त्वचा से खून छलकने वाला हो। फुर्तीले इतने कि पलक झपकते पेड़ पर ऊपर तक चढ़ जाते। उनके बालवत् व्यवहार को देख कर कोई अनुमान भी न लगा सकता था कि यह वही योगी सन्त हैं जो घण्टों तक ध्यान करते हैं और जिनके प्रवचन श्रोताओं की सुध-बुध भुला देते हैं। उनका मन तो वास्तव में था ही बालवत् – पूर्णतः अहंकार रहित, जो मूल-भूत आवश्यकता है शक्ति के वेग से उतरने के लिये। ऐसे अकल्पनीय थे हमारे पूज्य गुरुदेव।

2. एक बार संयोगवश परम पूज्य स्वामी सत्यानन्द जी (दादा गुरु) और गुरुदेव साथ-साथ बीसलपुर पहुँचे। दादा गुरु का यथायोग्य सत्कार किया गया। भैय्या कृष्ण चन्द्र को फोटोग्राफी का बहुत शौक था। पिता साहू जी ने उनके लिये विदेश से एक विशेष कैमरा मँगवाया था जो उस समय की एक दुर्लभ वस्तु होती थी। इस कैमरे को गुरुदेव कैलाश यात्रा पर अपने साथ लेकर गये थे। अपने शौक के अनुरूप जब कृष्ण भैय्या ने स्वामी सत्यानन्द जी व गुरुदेव की फोटो लेने की चेष्टा की तो स्वामी सत्यानन्द जी उन पर बहुत बिगड़े जिससे बालक कृष्ण का दिल टूट गया और वे रोने लगे। ये देख गुरु महाराज उनको एक ओर ले गये और जी भरकर अपने फोटो उतरवाये जिससे रोता हुआ बालक खुश हो गया। ऐसे करुणा के सागर थे गुरुदेव।

ऐसी मान्यता थी कि फोटो के प्रसार तथा लोगों द्वारा चरण छुआने से शक्ति का ह्रास होता है। सम्भवतः इसी कारण स्वामी सत्यानन्द जी फोटो नहीं खिंचवाते थे और चरण भी गिने-चुने लोगों से ही छुआते थे। परन्तु हमारे गुरुदेव कहते थे कि मैं तो बाँटने के लिये ही संसार में आया हूँ। शक्ति का स्रोत तो महासागर है, उसमें भला कमी कैसे हो

सकती है। गुरुदेव ने तो जीवन पर्यन्त दोनों हाथों से खूब बाँटा, चाहे चरण स्पर्श हो, हस्त स्पर्श हो, नेत्र स्पर्श हो अथवा मानसिक शक्ति संचारण द्वारा हो। मानव मात्र का हित करना ही उनका उद्देश्य था। ऐसे थे हमारे पूज्य गुरुदेव भगवान।

3. यह संस्मरण दिगोली कुटिया से सम्बन्धित है। घटना बहुत पुरानी है। 1940 के दशक में दिगोली कुटिया, जिसका नाम राम कुटी था जो अब स्वामी रामानन्द तपस्थली के नाम से जानी जाती है, पहाड़ की गोद में छिपा हुआ एक अत्यन्त दुर्गम स्थान था, विशेषकर मैदानी क्षेत्रों में रहने वालों के लिये। बीसलपुर से दिगोली पहुँचने में तीन दिन का समय लग जाता था। साधकगण बीसलपुर, पीलीभीत, मेरठ, फर्रुखाबाद आदि स्थानों से अल्मोड़ा होते हुए बस द्वारा दलबैंड पहुँचे। दलबैंड (दल अर्थात पत्थर और बैंड अर्थात सड़क का मोड़) सड़क के किनारे का वह स्थान है जहाँ बस से उतरकर दिगोली तक लगभग डेढ़ किलोमीटर पैदल चढ़कर जाना होता है। वर्तमान में कार या जीप द्वारा चार किलोमीटर के रास्ते से जा सकते हैं।

दलबैंड पहुँचते-पहुँचते सब लोग थक कर इतने चूर हो चुके थे कि वहीं जमीन पर लेटना पड़ा। किसी आने-जाने वाले से राम कुटी समाचार भिजवाया जिससे कुटिया तक पहुँचने में कोई सहायता मिल सके। गुरुदेव उन दिनों राम कुटी में ही थे। थोड़ी देर बाद देखा कि गुरुदेव स्वयं ही दौड़े चले आ रहे हैं। आते ही उन्होंने सब का स्वागत किया और पलक झपकते साधकों का सामान अपने सिर और दोनों हाथों में लाद लिया और तेजी से ऊपर की और बढ़ चले। अब और कोई विकल्प न देख साधकों ने भी हिम्मत करके अपनी-अपनी सामर्थ्य के अनुसार कुछ सामान उठाया, कुछ वहीं छोड़ा और गिरते-पड़ते कुटी की ओर बढ़ने लगे। थोड़ा ही आगे बढ़ पाये होंगे, देखते क्या हैं कि गुरुदेव वापस उतर कर आ गये हैं और बिना कुछ कहे सुने, शेष बचा हुआ सामान अपने कन्धों पर उठाकर दोबारा साधकों से पहले ही कुटी पर पहुँच गये। ऐसा था गुरुदेव का सेवा भाव। सच में गुरुदेव स्वयं को **'तृणादपि सुनीचेन'** ही समझते थे।

इसके बाद शिविर की अवधि में जो घटना घटी वह तो आज के युवा साधकों के लिये अविश्वसनीय है। दूर-दराज का पहाड़ी क्षेत्र होने के कारण वहाँ शौचादि के लिये खुले मैदान में ही जाना पड़ता था। सो, जल के लोटे के साथ खुरपी भी ले कर जानी होती थी जिससे कि जमीन में गड्ढा खोदकर मल को ढक दिया जाये। कुछ साधकों ने इस नियम का ठीक से पालन नहीं किया जिसके कारण कुटी में दुर्गन्ध आने लगी। यह देखकर गुरुदेव जी स्वयं ही साहू काशीनाथ जी को साथ लेकर चुपचाप मल को ढकने के लिये निकल पड़े। जब साधकों को पता चला तो वे बहुत लज्जित हुए और स्थान को स्वच्छ करके गुरुदेव से क्षमा याचना की। गुरुदेव ने अपने प्रवचन में समझाया कि शिविर साधना का महायज्ञ है; इसके लिये साधक को अनुशासन का पालन करते हुए अपना काम स्वयं करना चाहिये तथा शिविर में सामान कम से कम लाना चाहिये।

एक सामान्य मनुष्य को साधक बनाने की कितनी अद्भुत प्रक्रिया थी गुरुदेव महाराज की। साधकों को स्वयं आचरण करके सिखाने की विलक्षण कला को जो साधक एक बार देख लेता था वह उसे जीवन भर भूल नहीं सकता था।

4. ऐसे ही एक शिविर में जब साधकों को बार-बार समझाने पर भी ध्यान कक्ष के बाहर जूते चप्पल लाइन में न रखे होकर इधर-उधर बिखरे होते थे तो आने-जाने वालों को असुविधा होती थी और देखने में भी बहुत बुरा लगता था। एक दिन गुरुदेव ध्यान के बीच में चुपचाप उठे और बाहर आकर सब जूते चप्पल लाइन में लगा दिये। ध्यान के बाद आने पर जब साधकों ने देखा और पूछताछ करने से पता लगा कि यह कार्य स्वयं गुरुदेव ने

किया है तो वे अपनी इस अनुशासनहीनता पर बहुत लज्जित हुए और फिर अगले सत्र से सब व्यवस्थित हो गया। ऐसी अद्वितीय कार्यशैली थी हमारे पूज्य गुरुदेव महाराज की।

5. यह घटना स्याही देवी शिविर की है। यह स्थान अल्मोड़ा-रानीखेत रोड पर 5-6 किलोमीटर दूर ऊपर पहाड़ पर लगभग 6500 फुट की ऊँचाई पर शीतला खेत स्थान पर है। यहाँ देवी जी का एक मन्दिर है जो स्याही देवी के नाम से मशहूर है। शीतला खेत पूज्य गुरुदेव के एक शिष्य श्री वोहरा जी की एस्टेट में है। वहाँ उन्होंने फलों के बाग तथा गैस्ट हाउस आदि बना रखे थे। वोहरा जी के आग्रह पर यहाँ पहला शिविर रखा गया था। बाद में तो यहाँ कई बार शिविर लगाये गये थे।

इस शिविर में अन्य साधकों के साथ साहू काशीनाथ जी भी गये थे। स्थान की दुर्गमता के बारे में जानकर साहू जी एक सेवक को भी साथ ले गये थे। (वह समय शिविरों के शुरुआती दौर का था एवं नियम, अनुशासन आदि का अधिक ज्ञान भी न था।) सभी साधक दोपहर बाद तक पहुँच गये थे। पूज्य साहू जी ने देखा कि उनको छोड़कर अन्य सभी साधकों को उनके ठहरने का स्थान नियत कर दिया गया था और वे सब अपने-अपने स्थान पर पहुँच कर निवृत्त होकर आराम भी करने लगे थे, पर पूज्य साहू जी को न तो ठहरने की जगह बताई गई और न गुरुदेव ने ठीक से कोई बात ही की। पूज्य साहू जी इस प्रकार के व्यवहार का कारण नहीं समझ पा रहे थे। सायंकाल होने तक पूज्य साहू जी अपने सेवक के साथ बाहर ही बैठे रहे। पूज्य गुरुदेव सामने से गुजर कर भी बात नहीं कर रहे थे। अब तो अँधेरा भी होने लगा था और पहाड़ पर ठण्ड भी बढ़ने लगी थी। कुछ देर बाद तो ऐसा लगने लगा था कि इसी प्रकार बाहर पड़े रहे तो ठण्ड से जम ही जायेंगे। जब नहीं रहा गया तो पूज्य साहू जी पूज्य गुरुदेव के चरणों पर गिर पड़े और बोले कि महाराज आखिर मेरी गलती तो बता दें। गुरुदेव ने कहा – तुमने शिविर के नियम तोड़े हैं। शिविर में साधक को अपने सभी काम स्वयं करने होते हैं, यहाँ सेवक का प्रवेश वर्जित है, अतः उसके साथ-साथ तुम्हें भी शिविर में प्रवेश नहीं मिलेगा।

बड़ी विकट स्थिति उत्पन्न हो गई थी। आखिर बहुत अनुनय विनय और बार-बार क्षमा याचना के पश्चात पूज्य साहू जी ने कहा आज रात भर का आश्रय दे दीजिये, कल प्रातः ही मैं सेवक को लेकर वापस चला जाऊँगा क्योंकि सेवक अकेला घर नहीं जा सकेगा। अन्त में गुरुदेव द्रवित हो गये और शिविर करने की अनुमति दे दी किन्तु इस शर्त पर कि सेवक भी एक साधक की भाँति ही शिविर करेगा। सेवक को शिविर के नियम व दिनचर्या समझा दी गई और वह शिविर में सम्मिलित हो गया। संयोगवश, दो दिन के बाद उस सेवक के पेट में असहनीय पीड़ा उठी। वह दर्द से तड़पने लगा किन्तु उस निर्जन पहाड़ पर डॉक्टर कहाँ मिलने वाला था। जब यह बात पूज्य गुरुदेव को पता लगी तो वे ध्यान छोड़कर सेवक की सेवा में स्वयं लगे रहे। उसके पेट की सिकाई की, बायोकेमिक दवायें दीं, जो हर समय उनके पास रहती थीं और अन्य घरेलू उपचार करके उसकी पीड़ा को शान्त किया।

जब साधकों ने पूज्य गुरुदेव से जिज्ञासा की कि आपने इस सेवक के लिये अपना ध्यान भी छोड़ दिया तो गुरुदेव ने उत्तर दिया कि हमारी साधना सेवा, प्रेम और समर्पण से ही बनी है, इसके बिना हम साधना में उन्नति कर ही नहीं सकते।

ऐसे थे हमारे पूज्य गुरुदेव जो सेवा, प्रेम और समर्पण की मूर्ति थे, जिन्होंने पूर्णरूपेण अपना आपा (अहंकार) खो दिया था पर सिद्धान्तों और नियमों के पालन के लिये अनुशासन में उतने ही कठोर।

(क्रमशः)

श्री सुरेन्द्र बाबाजी

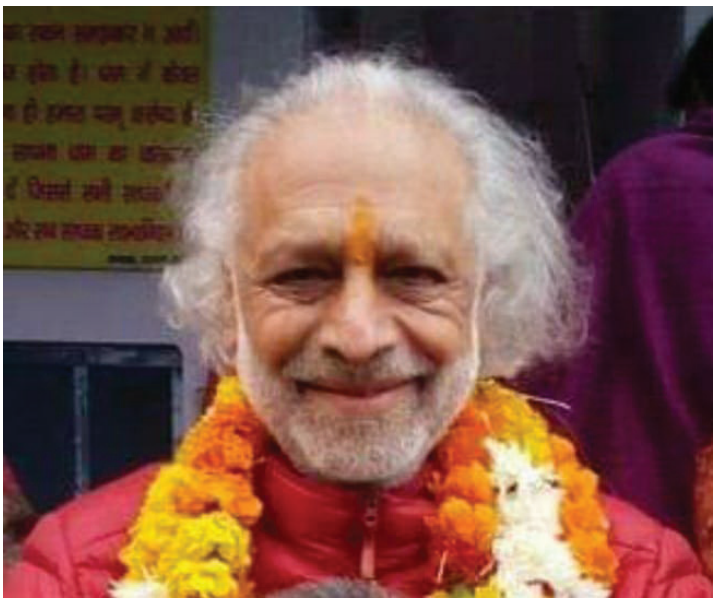

(11.06.1937 – 04.11.2023)

श्री सुरेन्द्र बाबाजी जो सन् 1960 से अमेरिका में रह रहे थे, दिनांक 4 नवम्बर 2023 को 86 वर्ष की अवस्था में इस नश्वर देह को त्याग कर गुरु चरणों में लीन हो गये।

साधना परिवार में आपको सब बाबाजी के नाम से जानते हैं। गुरुदेव की साधना प्रणाली का अमेरिका आदि पश्चिमी देशों में प्रचार-प्रसार का पूरा श्रेय श्रद्धेय बाबाजी को जाता है। आपके जीवन से सम्बन्धित जो भी जानकारी वरिष्ठ साधकों के माध्यम से प्राप्त हो पाई उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है, जिसमें त्रुटियाँ होने की सम्भावना से नकारा नहीं जा सकता।

बाबाजी का जन्म दिनांक 11 जून 1937 को मेरठ के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। पिता खेती-बाड़ी का कार्य करते थे। अपनी ज़मीन थी। पिता की मृत्यु अल्पायु में हो गयी थी जब आपकी आयु मात्र लगभग 4 वर्ष की रही होगी। ज़मीन ज़ायदाद आदि सब सम्बन्धियों द्वारा हड़प ली गयी थी। इनकी माता बच्चे के लालन-पालन करने के लिये मज़दूरी करने को बाध्य हो गई।

एक दिन आपकी माता आपको लेकर श्री रूप नारायण टण्डन जी के घर सत्संग में गई जहाँ गुरु महाराज भी उपस्थित थे। गुरु महाराज बालक को देखते ही उसमें छिपी प्रतिभा को पहचान गये और उन्होंने घोषणा कर दी कि यह बालक एक दिन अमेरिका जायेगा। यह सुनकर सबको विस्मय हुआ कि जिस बच्चे का लालन-पालन भी कठिनाई से

हो पाता हो वह कैसे अमेरिका जायेगा। गुरुदेव तो भविष्य दृष्टा थे। किसी सम्पन्न साधक को इशारा करने की देर थी कि बालक की पढ़ाई लिखाई का सारा प्रबन्ध कर दिया गया। कुशाग्र बुद्धि बाबाजी ने आर्थिक सहायता का भरपूर लाभ उठाते हुए आवश्यक योग्यता प्राप्त कर ली और सन् 1960 में गुरु जी के कथनानुसार अमेरिका प्रस्थान कर गये।

अमेरिका पहुँच कर भी बाबाजी जी ने खूब अध्ययन किया और आजीविका कमाने में संलग्न हो गये। सर्वप्रथम वह न्यूयार्क गये थे जहाँ वह कोलंबिया यूनिवर्सिटी में भारतीय विषय पढ़ाते थे। एक दिन अचानक भयंकर तूफान आया और इनकी सारी पुस्तकें अल्मारी से नीचे गिर पड़ीं। पुस्तकों को देखकर सहसा इनका हृदय परिवर्तन हो गया जैसे यकायक नींद से जाग गये हों। उनको लगा कि वे अपने उद्देश्य से भटक गये हैं और जिस कार्य को करने के लिये आये थे वह न करके कुछ और करने लग गये।

तुरन्त इन्होंने अपना मार्ग बदला और गुरुजी द्वारा प्रशस्त मार्ग पर अग्रसर हो गये। अब आप ध्यान और सत्संग में अधिक समय लगाने लगे। न्यूयॉर्क से आप लॉस एंजेलेस शिफ्ट कर गये। सत्संग के माध्यम से वहाँ के प्रेमी जन आपसे जुड़ने लगे और अनेक लोग आपको अपना पथ प्रदर्शक और गुरु मानने लगे। बीच-बीच में बाबाजी ने फ्रांस, जर्मनी और यूरोप के अन्य देशों की यात्रा भी की जिसमें आपकी शिष्या मीरा लटरोंश भी साथ रहती थीं। मीरा जी का बाबाजी से सम्पर्क उनके बड़े भाई पैट्रिक के माध्यम से हुआ था। पैट्रिक ने सर्वप्रथम बाबाजी की तस्वीर मीरा जी को दिखाई थी और केवल तस्वीर को देखकर मीरा जी पर जो प्रभाव पड़ा था उसका वर्णन उन्होंने इस प्रकार किया है –

'उनकी आँखों पर मैं मुग्ध थी, लगता था कि वह मेरे आर-पार देख रही हैं। जहाँ एक ओर वह अनन्त को समझने में लीन थीं, वहीं दूसरी ओर प्रेम और करुणा से भरी थीं। हैरानी थी कि वह रौबदार चेहरा – वह शाही अंदाज़ – मेरे देखे भाले थे। मेरे हृदय, मेरी आत्मा ने उसे पहचान लिया था, जिसकी उसे तलाश थी। मुझे पता था कि मैं जीवन भर और मृत्यु उपरान्त भी उनका आदर और उनकी सेवा करूँगी और हमेशा बाबाजी का अनुसरण करूँगी।'

आप कई बार अपनी शिष्या मीरा जी के निवास स्थान पेरिस भी गये। मीरा जी ने अपनी पुस्तक 'आध्यात्मिक भारत की यात्रा' में बाबाजी तथा गुरुदेव रामानन्द जी महाराज के विषय में विस्तार से लिखा है। वह गुरुदेव की साधना पद्धति से बहुत प्रभावित हुईं और उससे प्रेरित होकर उन्होंने पूरे भारत की यात्रा की जिसका विस्तृत विवरण उन्होंने अपनी उपरोक्त पुस्तक में लिखा है। मीरा जी के अतिरिक्त बाबाजी के जो अन्य अनुयायी थे उनके नाम हैं – नाओमी, मैग्गी, मेरी, मार्टिन, जैक, पैरी, सराह। नाओमी ने न्यूयॉर्क की कोलंबिया यूनिवर्सिटी से स्वामी रामानन्द पर डॉक्टरेट की और उसके

बाद यूनिवर्सिटी में पढ़ाने का काम किया। बाद में सेवा निवृत्त होकर वह एक माँ की तरह सेवा और साधना में जुट गईं।

होम्योपैथिक डॉक्टर बार्बरा भी प्राय: बाबाजी के साथ रहकर रोगियों की सेवा किया करती थीं। डॉक्टर बार्बरा उनकी निकटस्थ सहयोगियों में से एक थीं। वह पेशे से भी एक डॉक्टर हैं जो कलकत्ते के एक सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉक्टर बैनर्जी के अनुरोध पर उनके घर पर छ: महीने तक रही थीं।

अपनी पुस्तक में मीरा जी ने बताया है कि लॉस एंजेलेस से होकर ही माउंट कुचामा जाना होता है। कुचामा 4000 फीट की ऊँचाई पर स्थित दक्षिण कैलिफोर्निया की एक पवित्र पर्वत चोटी है जो मैक्सिको तक फैली है। एक सौ पचास मिलियन वर्ष पहले जुरासिक काल के समय अस्तित्व में आया कुचामा उस समय प्रशान्त महासागर के बीच एक द्वीप हुआ करता था। यही वह स्थान है जो बाबाजी का साधना स्थल बना। इस पर्वत को शहरी विकास से बचाने के लिये बाबाजी ने अपने मित्रों एवं अनुयायियों को वहाँ ज़मीन खरीदने के लिये प्रेरित किया। पर्वत के शीर्ष पर स्थित छ: सौ एकड़ को उसके नैसर्गिक रूप में संरक्षित करने के लिये अमेरिकी सरकार ने उसे राष्ट्रीय ऐतिहासिक एवं धार्मिक स्मारक के तौर पर घोषित किया है। इस पर्वत पर एक विशालकाय पत्थर है एक विशाल 'लिंगम' का, जिसके चारों ओर दिव्य-स्थल रूपी अर्ध-गोलाकार आकृति है और उसके सामने है भगवान् शिव का बैल नन्दी। शिव पुराण में एक ऐसे लिंगम् का वर्णन मिलता है जो पृथ्वी के विपरीत छोर यानि 'पाताल' में स्थित है। यह सब वर्णन मीरा जी द्वारा लिखित पुस्तक में मिलता है।

ऐसा पता लगा है कि कुचामा में बाबाजी के निवास स्थान पर प्रतिदिन प्रात: सायं नियम से जाप किया जाता रहा है तथा उनसे जुड़े हुए सभी साधक और स्वयं बाबाजी भी पृथ्वी पर शयन करते हैं। इसके अतिरिक्त लॉस एंजेलेस में भी प्रत्येक रविवार तीन घंटे का अखण्ड जाप नियम पूर्वक चलता है।

बाबा जी जब भी भारत भ्रमण के लिये आते थे, अपने शिष्यों सहित हरिद्वार में साधना धाम तथा दिल्ली में परम आदरणीय ब्रह्मलीन साधना परिवार के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री ओम् प्रकाश सेखड़ी जी के घर ही ठहरते थे। यहाँ भी भूमि पर शयन करते थे और प्रात: सायं के जाप का नियम पूर्वक पालन करते थे।

ऐसे थे ये गुरुदेव के महान शिष्य जो शरीर त्याग कर भी चिरकाल तक साधना परिवार के हृदय में वास करेंगे और अपने शिष्यों का मार्ग प्रशस्त करते रहेंगे।

जो साधक अधिक जानकारी के इच्छुक हों वे मीरा जी द्वारा लिखित पुस्तक 'आध्यात्मिक भारत की यात्रा' का अवलोकन कर सकते हैं जिसके हिन्दी और अंग्रेजी के संस्करण साधना धाम हरिद्वार में उपलब्ध हैं।

(इस लेख में श्रीमती रेवा भाम्बरी जी का महत्वपूर्ण योगदान है।)

कानपुर साधना शिविर-2023 - विवरण
(3 से 6 अक्तूबर 2023)

कानपुर शिविर का आयोजन दिनांक 3 अक्तूबर 2023 से 6 अक्तूबर 2023 तक गुरुदेव महाराज की अध्यक्षता में हुआ जिसका संचालन जाने माने वरिष्ठ साधकों ने किया जिनके नाम हैं –

श्रीमती सुशीला जायसवाल, श्रीमती उमा शुक्ल, श्री पवन जायसवाल, श्री शिव कुमार, श्री विष्णु जी, श्री पुरिन्दर तिवारी, श्रीमती वन्दना जायसवाल, दीपा शुक्ल, कुसुम माहेश्वरी, श्री अजय अग्रवाल, एवं श्रीमती सुरेखा अग्रवाल।

इस शिविर में लगभग 125 साधकों ने भाग लिया तथा 29 नये साधकों ने दीक्षा ग्रहण की। पूर्ति वाले दिन 500-600 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। शिविर की अवधि में गुरुदेव महाराज की कृपा से भरपूर शान्ति, सेवा व भक्ति का वातावरण बना रहा।

प्रवचन सार

शिविर में जिन साधकों ने अपने प्रवचनों से श्रोताओं का ज्ञानवर्धन किया उनका सार नीचे दिया जा रहा है –

श्रीमती गीता जायसवाल जी

गीता के अध्याय 7 के श्लोक 16 में भगवान् कहते हैं –

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥

अर्थात् चार प्रकार के पुण्यवान लोग मेरा भजन करते हैं – दुखिया, जानने की इच्छा वाला, अर्थ की आकांक्षा वाला और ज्ञानी। संसार से दुखी व्यक्ति जो मेरी शरण में आता है उसका दुःख मैं दूर कर देता हूँ, नहीं होता तो सहने की क्षमता दे देता हूँ। दूसरा जिज्ञासु, जो भगवान् को जानने की इच्छा से आता है उसको भगवान् ज्ञान प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं। तीसरा अर्थार्थी – उसको आवश्यकता के अनुसार अर्थ देते हैं। पर चौथा जो ज्ञानी है, बिना किसी कामना के आता है, वो भगवान् को सबसे ज्यादा प्रिय है।

इसी अध्याय के श्लोक 18 में भगवान् ने बताया है –

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्॥

अर्थात् चारों भक्त उदार हैं पर ज्ञानी तो मेरी आत्मा ही है क्योंकि वो मुझे ही सर्वोत्तम गति मान कर मेरा ही आश्रय लेता है।

इसलिये हमें राम नाम का जाप करना चाहिए और प्रभु का ही आश्रय लेना चाहिए।

श्रीमती उमा शुक्ल जी

हम जब संसार में कर्म करते हैं बन्धन में बँध जाते हैं। इस बन्धन से बचने का उपाय भगवान् ने गीता के अध्याय 4 के श्लोक 22 में बताया है –

यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते॥

अर्थात् जो व्यक्ति सहज में प्राप्ति से सन्तुष्ट रहता है, द्वन्द्वों से परे, मत्सररहित है, सिद्धि और असिद्धि में सम रहता है, वो कर्म करके भी बन्धन से नहीं बँधता है।

जीवन है, सुख आयेगा, दुःख आयेगा, लाभ आयेगा, हानि होगी – सभी को प्रभु का प्रसाद समझ स्वीकार करता है; मीरा ने विष पिया, किसी को दोषी नहीं ठहराया – न राणा को, न

भगवान् को।

द्वन्द्वातीत हो – द्वन्द्वों से परे, सुख दु:ख, लाभ हानि से परे का अर्थ यह नहीं कि इन्हें जाने ही नहीं, जड़ हो जाये, मूढ़ हो जाये। जाने, लेकिन प्रभावित न हो, विचलित न हो, जैसे लहरों के टूटने से चट्टान अविचल रहती है।

विमत्सर हो – अर्थात मत्सर रहित हो। ईर्ष्या न करें, दूसरे को बढ़ते देख जलन की भावना न हो। दूसरे की प्रशंसा सुनकर यदि बुरा लगता है तो वही ईर्ष्या है, कीना है।

समः सिद्धावसिद्धौ – सिद्धि असिद्धि में सम हो – 'सुख में फूलो नहीं, दु:ख में तड़पो नहीं'। जो सम नहीं रह सकता वो तो बीच में ही है, दलदल में है, चक्कर में है। इसलिये कर्म ऐसे करो जिससे बन्धन में न बँधो। परन्तु यह होगा तभी जब गुरु के सान्निध्य में रहेंगे।

पारस में अरु संत में बड़ो अन्तरो जान।
इक लोहा कंचन करे दूजो आपु समान॥

सत्संग हमें करना है। राम नाम का जप करने से ये सभी गुण आते चले जायेंगे।

श्री शिव कुमार जायसवाल जी

गीता के अध्याय 10 के श्लोक 9 में भगवान् बताते हैं –

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च॥

अर्थात् जो भक्ति में लीन रहते हैं, मुझ में मन को लगाये रहते हैं, प्राणों तक को अर्पण किये रहते हैं, आपस में भी हमेशा मेरे ही गुणों की चर्चा करते हैं, भगवान् का कथन करते हुए ही सन्तुष्ट रहते हैं और भगवान् में ही निरन्तर रमण करते हैं, ऐसे भक्त जिनका कोई स्वकीय लक्ष्य नहीं है, जो सभी मन, इन्द्रियों सहित भगवान् में लगे हैं, व्यर्थ, अनर्थ की बात नहीं करते हैं। आगे श्लोक 10 में भगवान् बताते हैं –

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्।
ददामि बद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते॥

उन निरन्तर ध्यान में लगे हुए प्रेमपूर्वक भजने वाले भक्तों को मैं तत्त्वज्ञान रूप योग देता हूँ जिससे वे मुझको ही प्राप्त हों। 84 लाख योनियों के बाद हमें मनुष्य शरीर प्राप्त हुआ है, इसका हम पूरा लाभ उठायें। प्रेम और सेवा से हम अध्यात्म में आगे बढ़ सकते हैं। सेवा तन से या मन से कैसे भी की जा सकती है। जो कुछ भी हमारे पास है, सब भगवान् का है। इस बात को सन्त तुलसीदास और रहीम के इस संवाद के माध्यम से समझा जा सकता है –

सन्त रहीम जब लगातार दान करने में लगे हुए थे तब तुलसीदास जी ने पूछा –

ऐसी देनी देन जू, कित सीखे हो सेन।
ज्यों ज्यों कर ऊँचा करो, त्यों त्यों नीचे नैन॥

रहीम जी ने उत्तर दिया –

देनहार कोई और है भेजत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करें तासों नीचे नैन॥

गीता के अध्याय 4 के श्लोक 34 में भगवान् कहते हैं –

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः॥

तुम उस ज्ञान को प्रणिपात से, परिप्रश्न और सेवा से जानोगे, तत्त्वदर्शी ज्ञानी तुझे ज्ञान का उपदेश देंगे।

शुरु में हम भगवान् के पास लम्बी सूची लेकर आते हैं, कुछ चीजें पूरी होने पर हमारा भगवान् पर विश्वास जग जाता है पर वो पक्का नहीं होता है, बनता बिगड़ता रहता है। जब विश्वास श्रद्धा में परिवर्तित हो जाता है तब वह पक्का हो जाता है और वही आगे चल कर निष्ठा का रूप ले लेता है।

धूप पड़े या छाईं, बंदा हटने वाला नाहीं।

जीवन में कठिन सवाल आयेंगे, सरल भी आयेंगे। कोई एक लाख के पाने में जितना खुश होगा उतना जाने पर दुखी भी होगा। अपने काम को पूरी लगन

से करें। राजमहल में झाड़ू लगाने वाले को लोग महल का मालिक समझ बैठे क्योंकि वो इतनी तत्परता से सफाई करता था। हर परिस्थिति में भगवान् से यही माँगें कि भगवान् मुदिता को बनाये रखना।

दुनिया में हूँ दुनिया का तलबदार नहीं हूँ।
बाज़ार में निकला हूँ खरीददार नहीं हूँ॥

जो समष्टि में यज्ञ है वही सेवा है। पत्थर ने अपना अंश प्रकृति को दिया, वनस्पति ने पशुओं को, पशुओं ने मनुष्यों को। इस तरह हमारा विकास धीरे-धीरे हो रहा है। सब एक दूसरे के लिये त्याग कर रहे हैं।

श्रीमती सुमन जायसवाल जी

गीता के अध्याय 3 के श्लोक 38 में भगवान् ने अर्जुन को बताया कि जैसे धुएँ से अग्नि और मैल से दर्पण ढका जाता है तथा झिल्ली से गर्भ ढका रहता है वैसे ही उस काम के द्वारा यह ज्ञान ढका हुआ है। अर्थात् जैसे धुएँ से आग ढकी रहती है उसी प्रकार काम और क्रोध से ज्ञान ढका रहता है। ज्ञान तो अग्निरूप है ही, अज्ञान के अन्धकार को दूर कर देता है। काम क्रोध धुएँ की तरह हैं। धुआँ आग को भुजा तो पाता नहीं, कुछ समय के लिये शान्त करता है।

उसी तरह मुँह देखने वाले शीशे पर मिट्टी पड़ जाने से वह ढक जाता है। वैसे ही काम क्रोध का वेग व्यक्ति के ज्ञान को ढक लेता है। शीशे पर धूल पड़ जाने पर मुँह साफ दिखाई नहीं देता।

तीसरा, जैसे झिल्ली से गर्भ ढका रहता है, ऐसे ही काम क्रोध से ज्ञान ढका रहता है, गर्भ उसमें बन्द रहता है। झिल्ली के आवरण में बच्चा बढ़ता रहता है। ये तीनों उदाहरण काम, क्रोध से ज्ञान के सम्बन्ध को स्पष्ट करते हैं। ज्ञान अन्दर है पर काम से ढका रहता है। राम नाम के जाप से हमारा ज्ञान बढ़ता रहता है। हम सत्य को पहचानना सीख जाते हैं, सब अँधियारा मिट जाता है।

श्रीमती अरुणा पाण्डेय जी

सन्त तुलसीदास ने रामायण में लिखा है – **'ईश्वर अंस जीव अविनासी'।** ईश्वर की सर्वोत्तम रचना मानव है। मानव जीवन दुर्लभ है। अशान्ति के कारण हमारे अन्दर हैं, बाहर नहीं हैं। जब हमारा विवेक सोया रहता है, तब हम अशान्त होते हैं। भगवान् ने हमें सारी शक्तियाँ दे रखी हैं, पर हम उनका सदुपयोग नहीं करते हैं, इन्द्रियों के भोग में लिप्त रहने के कारण दुखी रहते हैं।

गीता के अध्याय 7 में बताया गया है कि भगवान् ने प्रकृति को दो भागों में विभाजित किया है – परा और अपरा। एक है परा अर्थात चेतन प्रकृति जो हमें दिखाई नहीं देती, परन्तु उसका अनुभव कर सकते हैं। दूसरी है अपरा प्रकृति जो दिखाई देती है। इसको ऐसे समझा जा सकता है जैसे हम आँख को तो देख सकते हैं किन्तु उसके भीतर छुपे रेटिना को नहीं देख सकते जबकि देखने की शक्ति रेटिना में है न कि आँख में। इसी प्रकार कान को हम देख सकते हैं जबकि सुनने की शक्ति उसके भीतर छुपे परदे में है। इसका अर्थ यह हुआ कि हम अज्ञानतावश असल चीज़ को नहीं देख पाते और रस्सी को साँप समझते रहते हैं।

गीता के अध्याय 10 के श्लोक 10 में बताया गया है कि जो व्यक्ति निरन्तर प्रेमपूर्वक मुझको भजता रहता है उसको मैं तत्त्वज्ञान रूप योग देता हूँ जिससे वो मुझको ही प्राप्त हो जाता है अर्थात ऐसे व्यक्ति भगवान् को तत्त्व से जानने लगते हैं, वो सच्चाई को देख पाते हैं। तात्पर्य यह है कि हमें राम नाम का जाप निरन्तर करना चाहिए जिससे हमारे काम क्रोध आदि विकार शान्त होते चले जायें और हमारे अन्दर शान्ति का साम्राज्य आ जाये।

श्रीमती कुसुम माहेश्वरी जी

हमारी साधना गृहस्थी की साधना है और इसी में रहते हुए हमें अपना विकास करना है। इसके

लिये स्वामी जी ने कुछ बातें बताई हैं –

1. **मुख मण्डल पर मधुर मुस्कान** – गीता में भी भगवान् ने कहा है – **प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते** – जब हम खुश रहते हैं तो हमारे दुःख स्वयं ही कम हो जाते हैं, अर्थात् दुखों की हानि हो जाती है। जब हम संसार को अपना समझते हैं तो हम दुखी होते हैं और भगवान् को अपना समझते हैं तो प्रसन्न रहते हैं। सन्तों की वाणी से हमें बल मिलता है, सेवा से निर्मलता आती है। भगवान् और भगवान् की कृपा पर पूर्ण विश्वास रखें।
2. **हृदय में गूँजता हुआ राम नाम** – नाम को दिन रात रटते रहें। जैसे भँवरे की गुँजार होती है वैसे अन्दर गूँजता रहे जिससे हमारे अन्दर भगवान् का प्रकाश हमेशा बना रहे। जितना नाम चलेगा, हमारे अन्दर शान्ति, स्थिरता, समता आती जायेगी।
3. **मेल-मिलाप में प्रेम की प्रचुर मात्रा** – जब हम मिलें तो यही सोचें कि कैसे हम दूसरों के लिये उपयोगी हो सकते हैं। प्रेम और सेवा से जीवन भरें। भगवान् से प्रार्थना करें कि भगवान् हमें 1. सच्चा सेवक बना लें; 2. सच्चा मित्र बना लें; 3. अपना यन्त्र बना लें।

सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में – ऐसा सोचते हुए निश्चिन्त हो जायें।

श्री योगेन्द्र पाण्डेय जी

भगवान् राम को अवतारी पुरुष जान कर लक्ष्मण ने उन्हें अपना भगवान् मान लिया।

सीयराममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥

जब भक्ति मिलती है तब भगवान् की विशेष कृपा होती है।

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ॥

राम का नाम हमें हर क्षण जपना है पूरे विश्वास के साथ। वो हमारे अंगी-संगी हैं, वो हमारे ऊपर विशेष कृपा करते हैं। विष्णु भगवान् भी कहते हैं कि जो भक्त मेरी शरण में रहता है और जिसके भीतर काम-क्रोध आदि नहीं होते उसको मैं कभी नहीं छोड़ता। प्रभु कहते हैं हमारा अनन्य भक्त बनना बहुत कठिन है। जो आसुरी प्रवृत्ति को छोड़ देता है, समभाव से हमारा चिन्तन व मनन करता है वही अनन्य भक्त होता है।

गीता अध्याय 12 में भक्ति योग की चर्चा में भगवान् कहते हैं घर के कार्य करते हुए ईश्वर को याद करो, मन तुम्हारे अनुकूल हो जायेगा। अगर हम पूरी रामायण नहीं पढ़ सकते तो कुछ दोहे ऐसे हैं जिन्हें पढ़कर लाभ उठा सकते हैं, जैसे –

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी॥
जेहि बिधि नाथ होइ हित मोरा।
करहु सो बेगि दास मैं तोरा॥
प्रबिसि नगर कीजे सब काजा।
हृदयँ राखि कोसलपुर राजा॥
प्रभु कीं कृपा भयउ सब काजू।
जन्म हमार सफल भा आजू॥
दीन दयाल बिरिदु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥
यह बर मागउँ कृपा निकेता।
बसहु हृदय सिय अनुज समेता॥

श्री जगतवीर सिंह जी

बड़े भाग मानुष तन पावा

84 लाख योनियों के बाद मानुष तन मिला, गुरु की कृपा से सत्संग मिला, जिससे हमारा आध्यात्मिक ज्ञान पुष्ट हो। इसके लिये हमें दो तरह के साधन करने होंगे –

1. **आभ्यन्तरिक साधना** – में बढ़ती हुई समता, शान्त होते हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि।

2. **आन्तरिक साधना** – मन, बुद्धि, हृदय का समर्पण, ग्रहणशीलता।
3. **बाह्य साधना** – सेवा, प्रेम, सत्य।

पहले हम बाहर से प्रेम, सेवा और सत्य को अपनाते हैं तो अन्दर राम नाम के जाप से स्वयं ही शान्ति, स्थिरता, समता, ग्रहणशीलता आते चले आते हैं। हमें भगवान् के नाम का सहारा लेना है। इससे हमारे विकारों का संशोधन होता चला जाता है, वो क्षीण होते जाते हैं। ईश्वर प्रेम है, प्रेम ही ईश्वर है। हमें जागरूक रहना है अपने कर्मों के प्रति।

श्रीमती स्वर्णिमा जी

प्रसादे सर्वदुःखानां – गीता के अध्याय 2 के श्लोक 65 में भगवान् बताते हैं – अन्तःकरण की प्रसन्नता होने पर सम्पूर्ण दुःखों का अभाव हो जाता है। प्रसन्नचित्त कर्मयोगी की बुद्धि सब ओर से हटकर एक परमात्मा में ही लग जाती है। इसलिये हमें अपने कर्तव्य कर्म प्रसन्नतापूर्वक करने चाहिए। साधना से परमात्मा प्रसन्न होता है, साधन से नहीं। जितना गहरा साधना में उतरेंगे उतने ही प्रसन्न होंगे।

सोते जागते हर काम को करते,
राम नाम का जाप करें हम।
कर्म सभी कर प्रभु को अर्पित,
जीवन निष्काम बनाएं हम॥

प्रार्थना मेरी यही है नाथ – मैं न तुम्हें भूल जाऊँ, सुख में, दुःख में, हर समय तुम्हें ही याद करूँ, जहाँ देखूँ वहाँ पाऊँ तुम्हें।

श्रीमती कमला वर्मा जी

जीते जी अवगुणों से मुक्ति होना ही मोक्ष प्राप्त करने के बराबर है। राम नाम के द्वारा हम भवसागर से पार पा जायेंगे। सभी रोगों से मुक्ति पा जायेंगे, चाहे शारीरिक हों या मानसिक। हमारी साधना अत्यन्त सरल साधना है। पूज्य चाचा जी द्वारा लगाई हमारी बगिया खिल रही है। वो कहा करते थे – **लगाओ प्रभु से लगन धीरे धीरे**। कैसे?

1. कर्म करते हुए जागरूक रहना है कि कितना समय हम किस चीज़ में लगा रहे हैं।
2. कर्म को करते हुए प्रभु की याद बनाये रखनी है। सभी कर्तव्य अनासक्त भाव से करते रहें।
3. सर को झुकाओ अर्थात् दुःख में, सुख में सहज रहना है, बेचैन नहीं होना है। प्रभु के प्रति समर्पण भाव बनाये रखना है। अशान्त नहीं होना है। राम नाम के द्वारा स्वयं ही शान्ति का साम्राज्य स्थापित हो जाता है।

श्रीमती सुशीला जायसवाल जी

हमारी साधना कर्मयोग की साधना है, सहज है। निम्न योनियों से हम कर्म करते चले आ रहे हैं। कर्म के बिना जीवन निर्वाह नहीं हो सकता है।

गीता के अध्याय 2 के श्लोक 47 में भगवान् कहते हैं –

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

अर्थात् तेरा अधिकार केवल कर्म में ही है, फलों पर तेरा कोई अधिकार नहीं है, फल के लिये कर्म करने वाला मत बन। व्यक्ति को यह नहीं पता कि फल रूप में मुझे क्या मिलेगा। फल केवल हमारी चेष्टा पर निर्भर नहीं करता है, उसका सबसे बड़ा भाग तो अदृश्य होता है। हमें तो बस पूरी ईमानदारी के साथ कर्म को करना है अकर्त्ता बन कर और राम नाम का आधार लेकर, यह ध्यान में रखकर कि –

कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिरु सुमिरु नर उतरहिं पारा॥

शिविर की पूर्ति करते हुए बहन सुशीला ने कहा –

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा से कानपुर शिविर 2023 का सफल समापन हो चुका है। इन तीन दिनों के शिविर में सभी साधक भाई बहनों ने भगवान् की कृपा का साक्षात् अनुभव किया और राम नाम की

गंगा में डुबकी लगायी। इस शिविर में 125 साधकों ने भाग लिया और 500-600 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। आज शुक्ला चाचा जी के जन्म दिवस पर हम उनको याद करते हैं और उनके प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं। उनके द्वारा लगायी गयी बगिया आज भी मम्मी जी, सरोज दीदी, भैय्या जी, सोमवती दीदी, जगत वीर सिंह भैय्या, कमला, बिट्टो, कुसुम माहेश्वरी के अथक प्रयास के द्वारा खिल रही है। जिन भाई बहनों ने स्थूल में शिविर में अपना योगदान दिया उनका हम धन्यवाद करते हैं। सभी बहनों ने अपनी-अपनी ड्यूटी बहुत प्रसन्नापूर्वक की। बाहर से आने वाले सभी साधक भाई बहनों को धन्यवाद। पवन जायसवाल जी, शिव कुमार जी, कुसुम माहेश्वरी जी, पुरिन्दर भैय्या जी, प्रकाश माहेश्वरी जी, अजय अग्रवाल जी, सुलेखा अग्रवाल जी – सभी का हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। गुरुदेव भगवान् से प्रार्थना है कि हम सभी पर अपना आशीर्वाद बनाये रखें।

(कानपुर शिविर का सम्पूर्ण विवरण बहन उमा शुक्ल द्वारा प्रेषित किया गया)

❖ ❖ ❖

साधना का सच्चा लक्ष्य

जो कुछ संसार में घटित होता है वह केवल परमात्मा के ही करने से, उसके इशारे से होता है। हाँ, इतना अवश्य है कि परमात्मा हर साधक के हृदय में स्थित रहकर उसे उसके कर्मों के अनुसार शरीर रूपी यन्त्र पर आरूढ़ होकर माया के द्वारा घुमाता रहता है, ऐसी गीताकार की सुदृढ़ मान्यता है। ऐसी परिस्थितियों का सामना करने के लिये धैर्य के साथ शौर्य की महती आवश्यकता है। बदहवास होकर घबड़ाने से काम नहीं चलने वाला है। जो बोया है उसे और कोई नहीं काटेगा, उसे बोने वाले को ही काटना होगा। संसार में धोखाधड़ी चल सकती है पर प्रभु के दरबार में नहीं चल सकती। वहाँ देर हो सकती है पर अन्धेर नहीं है। जहाँ साधक जिस स्थिति में है, वह अनुकूल हो या प्रतिकूल, वहीं से आगे बढ़ने से ही उसका कल्याण सुनिश्चित हो सकता है। ऐसा करने से योग का प्रवेश हो जाता है और साधक समत्व में स्थापित होने की योग्यता पाने का अधिकारी हो जाता है। यूँ भी समझ सकते हैं कि जीवन में उपस्थित प्रत्येक परिस्थिति उसके आध्यात्मिक विकास के लिये ही उपस्थित होती है। किसी प्रकार के लोभ लालच को प्रश्रय नहीं देना है क्योंकि इससे साधक पतनोन्मुख हो सकता है। सन्त तुलसी की अनुभूति मानस के सुन्दरकाण्ड में स्पष्ट घोषणा करती है कि –

गुनसागर नागर नर जोऊ।
अलप लोभ भल कहइ न कोऊ॥

अस्तु, परमात्मा से जिस नाते में साधक को सुभीता हो, जिसमें वह सहजता महसूस करे, उसी में उसे स्वीकार करे। क्योंकि परमात्मा माँ, बाप, सखा और स्वामी साधक की अभिरुचि के अनुसार बनकर उसे समुचित दिशा-निर्देश प्रदान करता रहता है।

आइये सन्त तुलसी की अनुभूति को हम सब अपनी अनुभूति बनायें जिसमें साधक प्रभु पर ही यह दायित्व सोंप देता है कि उसके अनेक नाते हैं पर वह उसी नाते से उसे जोड़े जिसे वह आसानी से निभा सके –

मोहि तोहि नाते अनेक मानिए सो भाये।
तुलसी ज्यों त्यों कृपालु राम भगति पाये॥

साधना का सच्चा लक्ष्य है प्रभु चरणों की प्रीति – जिससे वह भक्ति पाकर भगवान् से जुड़ सके। यह जुड़ना ही परम योग है।

– हरि प्रकाश सिंह चौहान

बीसलपुर साधना शिविर-2023 - विवरण

(3 से 6 नवम्बर 2023)

परमपिता परमेश्वर एवं श्री गुरुदेव महाराज की असीम अनुकम्पा एवं सूक्ष्म अध्यक्षता में श्री अग्रवाल सभा भवन बीसलपुर में साधना शिविर का आयोजन दिनांक 03 नवम्बर सायं 03 बजे से 06 नवम्बर 2023 तक शिविर संचालक श्री विष्णु कुमार गोयल एवं श्रीमती शशि बाजपेयी के संयोजकत्व में प्रारम्भ हुआ। शिविर में कानपुर से पधारे 70 व अन्य स्थानों से पधारे 20 तथा 150 स्थानीय साधकों ने, इस प्रकार कुल 240 साधकों ने, प्रत्यक्ष उपस्थित होकर स्वयं में आध्यात्मिकता का पल्लवन किया। साथ ही 20 अन्य बन्धुओं ने शिविर में सेवा देकर सहयोग प्रदान किया।

साधना शिविर की दिनचर्या प्रातः जागरणोपरान्त सामूहिक ध्यान साधना, आरती, भ्रमण, योग, गीता एवं व्यावहारिक प्रवचन, स्वाध्याय, मौन एवं संकीर्तन साधना के प्रमुख सोपान रहे। सभी साधक नियमित दिनचर्या का पालन करते हुए पूज्य गुरुदेव भगवान् की कृपा प्राप्त कर स्वकृपार्थ संकल्पित हुए।

प्रवचन सार

बहिन शशि वाजपेयी जी

जड़ चेतन जग जीवन जत सकल राममय जानि।
बन्दउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥

अर्थात् जग में जितने जड़ और चेतन जीव हैं। सबको राममय जानकर मैं उन सबके चरण कमलों की सदा दोनों हाथ जोड़कर वन्दना करती हूँ।

स्वामी जी ने बताया कि गीता हमें अपने जीवन में आत्मसात कर लेनी चाहिए। गीता जीवन जीना सिखाती है। साधना के दो मार्ग हैं – भक्ति मार्ग और ज्ञान मार्ग। दोनों मार्गों से भगवद् प्राप्ति हो जाती है लेकिन भक्ति मार्ग सरल और श्रेष्ठ है। ऐसा गुरुदेव भगवान् ने बताया है। यथा –

भक्ति सुतंत्र सकल गुन खानी।
बिनु सतसंग न पावै प्रानी॥

गीता के 11वें अध्याय के 55वें श्लोक में भगवान् ने बताया है –

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव॥

उक्त श्लोक में 5 बातें बताई गई हैं।

1. मेरे लिये कर्म करने वाला होना,
2. मेरे ही परायण होना,
3. मेरा भक्त होना,
4. आसक्ति से रहित होना,
5. वैर भाव से रहित होना।

अर्थात् जो भी कर्म करे सभी कर्मों में यह भाव बनाना कि मैं भगवान् के लिए ही कर्म कर रहा हूँ और भगवान् की भक्ति से ही हो रहा है। भगवान् की कृपा से ही हो रहा है। भगवान् का आश्रय लेना, उसकी ही शरण होना, भक्त बनना, मैं भगवान् का हूँ और भगवान् ही एक हमारे हैं इस नाते सभी से प्रेम करना साधना है। ईश्वर प्रेम है और प्रेम ही ईश्वर है।

भगवान् कहते हैं कि जीवन में तीन बातें अपनानी हैं –

1. मेरे लिये कर्म कर,
2. मेरा भक्त बन,
3. मेरे परायण हो।

दो बातें त्याग देनी हैं –

1. आसक्ति रहित होना,
2. वैर भाव रहित होना।

इसलिये भक्ति भाव से राम नाम का जाप करना चाहिए।

बहिन कुसुम सिंह जी

आजु धन्य मैं धन्य अति, जद्यपि सब बिधि हीन।
निज जन जानि राम मोहि संत समागम दीन॥

गीता के 7वें अध्याय के 16वें श्लोक में भगवान् ने कहा है –

चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ॥

इस श्लोक में चार प्रकार के भक्त बताये गये हैं।

1. **आर्त** – अर्थात् दुःखी जो अपना दुःख दूर करने के लिए भगवान् की शरण में आता है। दुःख दूर न होने पर भी उसे सहन शक्ति प्रदान हो जाती है। द्रोपदी और विभीषण भगवान् की शरण में आये। भगवान् ने इनके दुःखों को दूर कर दिया।
2. **जिज्ञासु** – जो भगवान् को जानना चाहता है और भगवान् की शरण आता है। प्रभु उसकी जिज्ञासा शान्त करते हैं और उसे अपना लेते हैं।
3. **अर्थार्थी** – जो संसार की कामना लेकर (पुत्रेषणा, लोकेषणा, वित्तेषणा) भगवान् की शरण में आता है। भगवान् उनकी कामना को पूर्ण करते हैं।
4. **ज्ञानी** – ज्ञानी भक्त भगवान् से कुछ माँगता नहीं है बल्कि वह भगवान् की शरण में आ जाता है। ऐसे भक्त भगवान् को अतिशय प्रिय होते हैं और धीरे-धीरे वह ज्ञानी बन जाता है। ज्ञानी भटकता नहीं है डगमगाता नहीं है केवल भगवान् से ही प्रेम करता है।

केवल मनुष्य जन्म में ही भक्ति सम्भव है। अतः समय का सदुपयोग कर भगवान् की शरण में रहना चाहिए। राम नाम अपने आप में पूरा साधन है।

सनमुख होइ जीव मोहि जबहीं।
जन्म कोटि अघ नासहिं तबहीं॥

बहिन रैना गोयल जी

साधक के विकास क्रम में सत्संग, स्वाध्याय, मनन, प्रार्थना से ही भक्ति भाव जाग्रत होता है। यथा –

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई॥

जीवन में सत्संग परमावश्यक है जिसमें चिन्तन एवं मनन का जागरण होता है। सत्संग करने से स्वाध्याय की प्रवृत्ति बढ़ती है तथा ईश्वर के प्रति मन में श्रद्धा जाग्रत हो जाती है। ईश्वर का स्मरण कर व्यक्ति अपने जीवन को धन्य बना लेता है।

बहिन सुनीता दुआ जी

सर्वप्रथम हमें गुरु की कृपा प्राप्त करनी है। गुरु कृपा प्राप्त होने के पश्चात् हमें अपनी कृपा प्राप्त करनी है। आत्म कृपा हेतु अपना प्रयास सर्वाधिक करना है। पुरुषार्थ करना है। नाम जप, स्वाध्याय, मनन, पठन-पाठन करना है। जीवन में अनुकूलता और प्रतिकूलता तो आती जाती रहती हैं।

घोर अंधेरे में अध्यात्म का अवलम्बन अवश्य मिलेगा। अध्यात्म का अवलम्बन समय और धैर्य की माँग करता है। हमें अपनी कमियों को देखना है। दूसरों के गुणों को देखना है। अभी हम देह भाव में हैं। धीरे-धीरे हम आत्म भाव की ओर बढ़ेंगे। हमारा कायाकल्प होता चला जायेगा। आत्मभाव हो जाने पर राग-द्वेष समाप्त हो जाते हैं। सर्वत्र ईश्वर के दर्शन होने लगते हैं और गुरु कृपा से प्राणी ईश्वरमय हो जाता है।

बहिन अरुणा पाण्डेय जी

जड़ चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।
बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि॥

स्वामी जी कहते हैं साधना मनुष्य को महान बनाती है। प्रारम्भिक अवस्था में हम सुख के लिये

ही आगे बढ़ते हैं। अध्यात्म पाप पुण्य की बात नहीं करता, कर्म की बात करता है। हम जो भी कर्म करते हैं उसी का परिणाम हमारे सामने आता है कभी न कभी। पाप जानबूझकर नहीं करना चाहिए। अनजाने में हुए पाप को प्रभु क्षमा कर देते हैं। गुरुदेव भगवान् कहते हैं जब जीवन के सभी सहारे नष्ट हो जाते हैं तब हमें अध्यात्म का अवलम्बन अवश्य मिलेगा। अध्यात्म रूपी माँ आयेगी और बतायेगी कि जीवन का एक लक्ष्य है भगवान् की प्राप्ति। कामनाओं से विरक्त होकर हम ईश्वर की प्राप्ति कर सकते हैं। कामना एक ऐसी अग्नि है जो हमारी शक्ति, सामर्थ्य को जला कर भस्म कर देती है। अध्यात्म प्रभात का सूचक है। जब जागेंगे तभी सवेरा होगा। हमें पशुत्व से मनुष्यत्व, मनुष्यत्व से देवत्व, देवत्व से दिव्यत्व की ओर बढ़ना है। राम नाम का जाप ही हमारा उद्धार कर सकता है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी कहा है –

राम नाम बिनु गिरा न सोहा।
देखु बिचारि त्यागि मद मोहा॥

बहिन कान्ति सिंह जी

गुरु देव भगवान् ने बताया है कि गीता को अपने जीवन में आत्मसात कर लेना चाहिए। गीता के 9वें अध्याय के 30वें श्लोक में भगवान् कहते हैं –

अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥

दुराचारी से दुराचारी भी मेरी शरण में आ जाता है तो वह साधु कहलाने के योग्य बन जाता है। गोस्वामी तुलसी दास जी ने भी रामचरित मानस में कहा है –

कोटि बिप्र बध लागहिं जाहू।
आएँ सरन तजउँ नहिं ताहू॥

भगवान् ने कहा शरण में आये हुए का मैं त्याग नहीं करता हूँ। भले ही उसने कितने ही पाप क्यूँ न किये हों। भगवान् की कृपा, गुरु की कृपा हमें प्राप्त है। अपनी कृपा हमें स्वयं करनी है। हमें विश्वास करना है कि राम नाम का जाप ईश्वर प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है। इससे हमारे अन्तःकरण में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है। हमारी इच्छायें निरन्तर पूर्ण होती रहती हैं। ईश्वर की कृपा से मनःशान्ति प्राप्त होती है। गुरु भगवान् पर हम जितना निर्भर होते हैं उतना ही निर्भय हो जाते हैं। हमारे सभी मार्ग खुल जाते हैं। सत्संग के प्रति हमें तत्पर रहना चाहिए। सत्संग से हमारा जीवन बदलता चला जाता है। एक पलड़े में यदि सम्पूर्ण सुख रख दिये जायें और एक पलड़े में सत्संग रख दिया जाये तो सत्संग ही भारी पड़ता है।

गोस्वामी जी ने कहा है –

तात स्वर्ग अपबर्ग सुख धरिअ तुला एक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सत्संग॥

भगवान् सभी प्राणियों में समान रूप से व्याप्त हैं। राम नाम एक ऐसी औषधि है जिससे अमंगल रूपी महारोग नष्ट हो जाते हैं।

बहिन सुमन जायसवाल जी

गुरुदेव की वन्दना करते हुए गीता के दूसरे अध्याय के 48वें श्लोक में भगवान् ने अर्जुन से कहा है हे अर्जुन! आसक्ति रहित होकर सिद्धि असिद्धि में समभाव रखकर तू युद्ध कर –

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनञ्जय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते॥

जब हम कर्म करते हैं उसमें सफलता मिले या असफलता मिले हमें समान भाव ही रखना चाहिए। और यह भी समझना चाहिए कि भगवान् की ऐसी ही कृपा है। हमारे संस्कार ऐसे होने चाहिए कि सुख और दुःख हमें समान लगें। समत्व को ही योग कहा गया है। जब उच्च चेतना साधक में जागृत होती है तब वह भगवान् से जुड़ जाता है। इसलिए हमें सदैव राम नाम का जाप करना चाहिए।

श्री योगेश पाण्डेय जी

गुरुदेव की वन्दना करते हुए हमें यह मन में धारणा बनानी चाहिए कि गुरु कृपा से ही अपनी कृपा प्राप्त हो सकती है। मानव जीवन प्राप्त करके भगवान् की ओर पीठ करके नहीं बैठे रहना है वरन् भगवान् के सम्मुख होना है। हमारा जीवन बहुत कम है और मिले हुए समय को, मिले हुए मानव जीवन को व्यर्थ नहीं गँवाना चाहिए। गोस्वामी जी ने कहा है –

कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिरि-सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

हमें सदैव राम नाम का स्मरण करते रहना चाहिए और अपने जीवन को धन्य बनाते रहना चाहिए।

बहिन मुकलेश जायसवाल जी

मानव शरीर बहुत ही दुर्लभ है। घर गृहस्थी में रहते हुए भी भगवान् का स्मरण बनाये रखना चाहिए। हम जो भी कर्म करें निर्लिप्त भाव से प्रभु का कर्म समझ कर करें। भोजन करने और बनाने में भी यह भाव रखना कि यह भी भगवान् का कर्म है।

कर से कर्म करो विधि नाना।
मन राखो जहां कृपा निधाना॥

नियमित होकर सभी कर्म करते हैं तो साधना के लिए भी नियमित समय मिल जाता है। भक्त के साथ भगवान् हमेशा बने रहते हैं।

भक्त दुलारे राम के जित चाहे तित जायें।
तिनके पीछे हरि फिरे भूखे न रह जायें॥

अतः हमें राम नाम रूपी डोर से भगवान् के साथ जुड़े रहना चाहिए।

श्री दीपक दीक्षित जी

चौरासी लाख योनियों में भागने के पश्चात् हमें मनुष्य शरीर मिला है। जब से मैं गुरुदेव से जुड़ा हूँ, सत्संग मिला है। यह अनोखा सत्संग है। विश्वास करो, चेष्टा करो और धैर्य धरो। गुरु ही साधक और गुरु ही साधन है। गुरु ही हमारा ध्यान है, गुरु ही धारणा है, गुरु ही हमारा इष्ट है, गुरु ही हमारा खेवन हार है, गुरु ही भवतारण हार है। भक्ति भाव से हमें ईश्वर के प्रति समर्पित होकर कर्म करना चाहिए। गुरु की महिमा एवं ईश्वर की महिमा अपरम्पार है जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता है। गुरुदेव ने हमें नाम जप दिया है उसे हमें अपने जीवन में उतारकर जीवन को धन्य बनाना है।

बहिन मीरा दुबे जी

पूज्यनीय गुरुदेव महाराज के 314वें पत्र में लिखा है समर्पण कर्तव्य का होना चाहिए। नैतिक कर्म तो करने ही होंगे। जो नहीं करता है वह पाप का भागी होता है। जिस प्रकार दुर्योधन ने शकुनी से कहा मेरा मामा पासा फेंकेगा, उसी प्रकार यह युधिष्ठिर भी कह सकते थे कि मेरी ओर से कृष्ण पासा फेंकेंगे।

1. **नियत कर्म** – कर्म मोह से रहित होकर करें।
2. **स्वभाव जन कर्म** – स्वभाव से युक्त होकर कर्म करें। स्वभाववश व्यक्ति गलतियाँ कर देता है।
3. **नैतिक कर्म** – नित्य के सभी कर्तव्य कर्म करना अर्थात् साधना के लिये भी हमें अवश्य समय निकालना होगा। सत्संग में जाना होगा। भगवान् में भक्ति भाव रखना होगा। तभी हम अपने जीवन को सुधार सकते हैं।

श्री विष्णु कुमार गोयल जी

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु, गुरु देवो महेश्वरा।
गुरु साक्षात परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

आज मैं भैय्या मथुरा प्रसाद जी एवं आदरणीय साहू काशीनाथ जी को स्मरण करता हूँ। बीसलपुर में स्वामी जी का पदार्पण आदरणीय साहू काशीनाथ जी के निवास स्थान पर हुआ और वहीं से यह वृक्ष रोपित हुआ है तथा आदरणीय भैय्या मथुरा प्रसाद

जी से हम सभी साधक भाई बहनों को बीसलपुर में शिविर की प्रेरणा मिली तथा भैय्या जी की कृपा से शिविर रूपी वृक्षारोपण हुआ। हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं कानपुर के भाई बहनों का। वे इतना कष्ट उठाकर शिविर में आते हैं और शिविर व्यवस्था में योगदान देकर कृतार्थ करते हैं।

हमने जाना कि साधना अपने लिये नहीं करते वरन् सार्वभौमिक कार्य है सभी के कल्याण के लिये है।

हमारे ग्रन्थों में कहा गया है –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्॥

गीता हमें जीवन में जीने की कला सिखाती है सफल जीवन हेतु गीता को जीवन में उतारना होगा। गीता जीवन संगीत बने।

हम पशु जगत से मनुष्य जगत में आये, शनैः-शनैः हमारा विकास विकासकारिणी आदि शक्ति ने किया हमें मानव शरीर मिला।

हम भाग्यशाली हैं कि मानव शरीर में अग्रिम विकास हेतु हमें युग प्रवर्तक परम गुरुदेव भगवान् का कृपामय हाथ मिला।

गुरुदेव भगवान् ने हमें माथा टेकना सिखाया, माँ की गोदी में हमें बिठाया। प्रेम, सेवा, समर्पण का मार्ग हमारे लिये प्रशस्त किया। हमें माँ के चरणों में लोटना सिखाया। चिन्ता रहित प्रेम से जीना सिखाया एवं गुरुदेव भगवान् ने बताया नाम प्रभु कृपा का वाहन है –

कलियुग केवल नाम अधारा।
सुमिरि सुमिरि नर उतरहिं पारा॥

मुझे पहले लगता था मैं सब कुछ कर रहा हूँ लेकिन धीरे-धीरे मुझे लगा कि करने वाला तो कोई और है महाशक्ति ही सब कुछ करने वाली है। मुझे माथा टेकना आया। जीवन में जब प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती हैं तो भगवान् ही याद आते हैं। हमारी निष्ठा नहीं डगमगानी चाहिए। प्रतिकूलता हमें ताकतवर बनाती है। प्रतिकूलता में ही हम बड़े-बड़े पाठ पढ़ जाते हैं। हमें परमार्थ की ओर बढ़ना चाहिए।

गोस्वामी जी ने लिखा है –

राम नाम जपि जागै जोगी।
परमार्थी प्रपंच वियोगी॥

अनुकूलता में हमें गुरुदेव को धन्यवाद देना चाहिए। जो अच्छा हुआ है वह भगवान् की कृपा से हुआ है। भगवान् हमारे साथ हर समय हैं। अनुकूलता में फूलें नहीं, भगवान् को भूलें नहीं, दुःख में तड़पें नहीं।

सन्त कबीरदास जी ने कहा है –

दुःख में सुमिरन सब करे, सुख में करै न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे, दुःख काहे को होय॥

हमें अपना लक्ष्य याद रखना चाहिए। हम संसार में क्यों आये हैं, क्या करना है, समय का अभाव लक्ष्य के सामने नहीं आना चाहिए। हमारे सामने पर्याप्त समय है। जहाँ हैं, जैसे हैं, वहीं रहकर हमें भगवान् की प्राप्ति हो सकती है। भगवान् भाव के भूखे हैं। भाव प्रधान होना चाहिए। भगवान् कृष्ण ने दुर्योधन के विविध व्यंजनों को त्याग कर भाव के वशीभूत होकर महात्मा विदुर के घर साग का भोग लगाया। लक्ष्य को हमें हर पल याद रखना चाहिए। जिससे रास्ते बनते चले जाते हैं। भगवान् की प्राप्ति सहज हो जाती है।

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है –

'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।'

उठो जागो और जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो तब तक मत रुको।

मुझे लगता था सब कुछ मैं कर रहा हूँ परन्तु जब होश आया तो जानने लगा कि करने वाले तो गुरु देव भगवान् ही हैं, वह महान शक्ति हैं और उनकी कृपा से सब होता जाता है। अनुकूलता में भगवान् का धन्यवाद देना चाहिए। साथ ही प्रतिकूलता में निष्ठा कभी डगमगानी नहीं चाहिए। प्रतिकूलता हमें ताकतवर बनाती है। हमारे अन्दर के विकारों पर

झाड़ू लगाती है और बड़े-बड़े पाठ पढ़ाती है। तथा माथा टेकना भी ठीक से आने लगता है।

सेवा प्रेम समर्पण – सेवा एक यज्ञ है। जो समष्टि में यज्ञ है वही व्यष्टि में सेवा है। पूर्ण ब्रह्माण्ड में परम सत्ता द्वारा यज्ञ रूप रचा गया। अध्यात्म विकास जो विश्व का आधार तत्व है वह महाशक्ति द्वारा ही संचालित होता है। माँ के प्रतिरूप पुत्र बनने के लिए सेवामय बनना होगा। अन्यथा माँ की कृपा प्राप्त नहीं होगी। सेवा का आध्यात्मिक साधन से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सेवा का मूल रूप सिद्धान्त स्वार्थ रहित निस्वार्थ होना अर्थात् दूसरे की भलाई में शक्ति लगा देना है। बिना किसी अपेक्षा के सेवा से हमारी चेतना ऊपर होती है।

अगर हम विकासशील सृष्टि की ओर दृष्टि डालें तब हमें पूरे विश्व में प्रेम का साम्राज्य दिखाई पड़ता है। प्रेम एक आकर्षण शक्ति है जो तमाम परस्पर विरोधी शक्तियों को बाँधकर एक विशाल उद्देश्य से विश्व की अलौकिक अभिव्यक्ति का कारण बनती है। इससे सौन्दर्य की अभिव्यक्ति होती है। इसी से ललति कलाओं का लालित है और प्रकृति का अनुपम ऐश्वर्य है। प्रेम आनन्द की अभिव्यक्ति है। प्रेम की तीन कोटियाँ होती हैं।

1. साधारण लोगों में प्रेम के उत्तर में ही प्रेम होता है। कोई हमें अच्छा मानता है। हम उसे अच्छा मानते हैं। इस प्रेम में दूसरों का दोष थोड़ी सीमा तक ही सहन होता है।
2. उसके ऊपर का प्रेम दूसरे की उच्चता और उदारता में पूर्ण विश्वास रखता है और दूसरों के गुण देखकर सहज में खिंच जाता है। वह काफी हद तक दूसरे के दोषों को क्षमा कर सकता है। और अपनी उपेक्षा सहन कर लेता है। यह प्रेम श्रद्धा के रंग में रंगा होता है अथवा वात्सल्य भरा होता है यह स्थायी और निःस्वार्थ होता है।
3. यह तीसरी उच्च कोटि का प्रेम है जो दूसरे की उच्चता उदारता में विश्वास रखता है। विश्वास तो रखता ही है साथ ही प्रेम उसका स्वभाव ही बन जाता है। यह प्रेम करने के लिये ही किया जाता है। इसमें स्वार्थ की कहीं गन्ध नहीं होती है। साधक सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ता है। यह दिव्य कोटि का प्रेम कहा जाता है। धीरे-धीरे उच्च चेतना जागृत हो ही जाती है।

प्रेम के बदले प्रेम नहीं करना चाहिए। उदारता से दूसरे के गुणों को देखना चाहिए अवगुणों को नहीं। प्रेम सहज ही सभी से समान रूप से होता है इसे दिव्य काटि का प्रेम कहा जाता है। धीरे-धीरे उच्च चेतना जाग्रत हो जाती है।

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः॥

उपर्युक्तानुसार सभी प्राणियों में समभाव रखना ही सच्चा प्रेम सेवा एवं समर्पण है।

आभार – साधना शिविर की पूर्ति पर शिविर संचालक श्री विष्णु कुमार गोयल ने श्री अग्रवाल सभा भवन की प्रबन्ध समिति का धन्यवाद दिया जिन्होंने स्थान उपलब्ध कराकर साधकों को सुविधायें प्रदान की। स्वच्छकों, सेवकों तथा स्थानीय साधकों जिन्होंने जाने अनजाने किसी भी प्रकार का सहयोग प्रदान किया है तथा उन सभी बाह्य साधकों जिन्होंने शिविर की अल्प-सुविधाओं में रहकर अपना अमूल्य समय देकर शिविर की गुणवत्ता बढ़ाई है। सभी का हृदय से बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया तथा कामना की इसी प्रकार भविष्य में भी सहयोग मिलता रहेगा।

सभी को राम-राम।

शोक संवेदना – शिविर की पूर्ति के समय अमेरिकावासी बाबा सुरेन्द्र नाथ जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई एवं शिविर में हुआ जाप भी उनकी पुण्य आत्मा के प्रति समर्पित किया गया, तथा दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की गई कि ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करते हुए अपने हृदय में अवस्थित करें।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

तप की महिमा

हमारे शास्त्रों में तप की बड़ी महिमा बताई गई है। तप के बल से ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी, तप के बल से ही विष्णुजी सम्पूर्ण जगत का पालन करते हैं और तप के बल से ही शंकरजी संहार करते हैं। तप के बल से ऋषि वाल्मीकि निहत्थों की हत्या जैसे घोर पापों को जलाकर रामायण जैसे महान ग्रन्थ की संस्कृत में काव्य रचना करके त्रिकालदर्शी आदिकवि बन गये।

सन्त तुलसीदास के अनुसार तो तप के बल से ही शेष जी पृथ्वी का भार भी वहन करते हैं –

तपबल रचइ प्रपंचु बिधाता।
तपबल बिष्नु सकल जग त्राता॥
तपबल संभु करहिं संघारा।
तपबल सेषु धरइ महिभारा॥

मनु और उनकी पत्नी शतरूपा ने केवल जल का आहार करके छः हजार वर्ष तक, वायु का आहार करके सात हजार वर्ष तथा बिना वायु के दस हजार वर्ष तप किया; तब जाकर उनको अपने अभीष्ट की प्राप्ति हुई। रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण ने तप के बल से मनचाहे वर पाये। पार्वती ने तप करके शिवजी को पाया। ध्रुव ने तप करके प्रभु की गोद पाई। कश्यप और अदिति ने तप करके भगवान् को पुत्र रूप में प्राप्त किया। ऐसे-ऐसे अनेक उदाहरण पुराणों में मिलते हैं।

यह तो हुआ एक प्रकार का तप जो किसी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के उद्देश्य से किया जाता था। इसके अतिरिक्त कर्तव्य पालन के लिये कष्ट सहना भी तप होता है। ऐसा तप किया था भगवान् राम ने जिन्होंने लोकहित के लिये लगातार 14 वर्ष तक पृथ्वी पर शयन किया, संन्यासी के वेष में कन्द मूल फल खाकर गुज़ारा किया, वन में वास करते हुए जंगलों, पहाड़ों, कन्दराओं में सर्दी, गर्मी, बरसात के थपेड़े खाये, बिना सेना के राक्षसों से युद्ध किया, एक वर्ष तक पत्नी का वियोग सहा और भी कितने ही असहनीय कष्ट सहे।

ऐसा तप किया था लक्ष्मण ने जिन्होंने पत्नी सहित सारे सुख छोड़कर बिना शयन किये लगातार 14 वर्ष तक भगवान् राम की सेवा की। ऐसा ही तप किया था भरत और शत्रुघ्न ने, जिन्होंने तपस्वी की भाँति जीवन बिताते हुए, पूरे चौदह वर्ष पृथ्वी में गड्ढ़ा खोदकर शयन किया, प्रतिदिन नंदीग्राम से अयोध्या जाकर राज्यसिंहासन पर आसीन खड़ाऊँ को भगवान् राम मानकर स्वयं को सेवक समझते हुए राजा के सभी कर्तव्य निभाये।

श्रीमद्भागवत में कथा आती है कि कर्दम ऋषि देवहूति से विवाह करने के पश्चात् समाधि में बैठ गये थे जो 40 वर्ष तक चली। इस पूरी अवधि में देवहूति उनकी जानकारी के बिना उनकी सेवा करते करते जवान से बूढ़ी हो गई। उनकी यह सेवा किसी तप से कम नहीं थी।

लेकिन भगवान् कृष्ण ने कलियुग के मनुष्यों के लिये तप की एक नई परिभाषा का सृजन किया जिसके अनुसार तप के लिये वनों में, पर्वतों पर अथवा गुफाओं में जाने की आवश्यकता नहीं है वरन् संसार में रहते हुए ही अपने कर्तव्यों को निभाते हुए ही किया जा सकता है। आधुनिक युग में कुछ समय पूर्व भक्ति काल में जो भक्त हुए हैं वे सभी तपस्वी थे। सूरदास, मीराबाई, कबीर, तुलसीदास, रविदास, सखूबाई, तुकाराम, रहीम, त्यागराज, रामानुजाचार्य, रामानंद, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, श्री अरविंद, वल्लभाचार्य, नानक, मलूकदास, सदन कसाई आदि सन्त इस तप के ज्वलन्त उदाहरण हैं। इन सभी सन्तों का जीवन दरिद्रता, उपेक्षा और अनेक प्रकार के शारीरिक कष्टों से भरा हुआ था। इन सभी प्रकार के कष्टों का वहन करते हुए भी इन भक्तों

ने अपना कर्तव्य नहीं छोड़ा। इसी तप के बल से ये सब भक्त की श्रेणी में आये।

गीता के अध्याय 18 में यज्ञ, दान और तप सभी मनुष्यों के लिये अवश्य करणीय कर्म बताये गये हैं –

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्।

अध्याय 17 में तप की विधि भी विस्तार से समझाई गई है जिसमें शरीर, वाणी तथा मन तप के साधन बताये गये हैं –

1. शारीरिक तप

देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥

अर्थात् देवता, ब्राह्मण, गुरु और ज्ञानी – इन चार जनों का पूजन। देवता उनको कहते हैं जो गीता अध्याय 16 में वर्णित दैवी सम्पदा वाले हैं।

ब्राह्मण वे होते हैं जिनके स्वभाव में गीता अध्याय 18 के श्लोक 42 में वर्णित गुण होते हैं। गुरु शब्द से माता, पिता, आचार्य और वृद्ध एवं अपने से जो किसी प्रकार भी बड़े हों, उन सबको समझना चाहिए। ज्ञानी उनको समझना चाहिए जिनमें गीता अध्याय 13 के श्लोक 7 से 11 में वर्णित गुण हों। **पूजनम्** का अर्थ है उपरोक्त चारों का मान सम्मान करना, उनके गुणों को धारण करना, उनकी आज्ञा का पालन करना, उनके द्वारा निर्धारित मार्ग का अनुसरण करना, अपने को उनसे छोटा समझना।

शारीरिक तप की दूसरी आवश्यकता है **'पवित्रता'** जिसका अर्थ है अपने शरीर को बाहर और भीतर से शुद्ध रखना। न केवल शरीर को, अपने घर को, अपने वातावरण को भी स्वच्छ रखना, कहीं भी गन्दगी न फैलाना, कहीं गन्दगी दिखाई भी दे तो उसे साफ करना या साफ करने में सहायता करना आदि। इसके अतिरिक्त अपने शरीर को सेवा, प्रेम व सत्संग में लगाना भी आवश्यक है।

शारीरिक तप की तीसरी आवश्यकता है **'सरलता'**। सरलता का अर्थ है दम्भ रहित होना अर्थात् स्वयं को जैसा है वैसा ही प्रदर्शित करना, सबके साथ सद् व्यवहार करना, छल, कपट, बेईमानी, बनावट आदि से दूर रहना।

शारीरिक तप की चौथी आवश्यकता है **'ब्रह्मचर्य'** की। ब्रह्मचर्य का अर्थ है शास्त्रों में वर्णित ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना, अष्टांग योग को धारण करना। संक्षिप्त में कहें तो ब्रह्म मुहूर्त में जागना, नियम से स्नान, सन्ध्या आदि करना, उचित मात्रा में भोजन व शयन करना, पर-स्त्री में माता, बहन, कन्या की दृष्टि रखना, सभी कार्य उचित समय पर करना, वर्ण व आश्रम के अनुसार अपने कर्तव्य का पालन करना आदि ब्रह्मचारी के लक्षण हैं।

शारीरिक तप की पाँचवीं आवश्यकता है **'अहिंसा'**। हमारे शरीर के द्वारा किसी भी जीव को किसी प्रकार की भी हानि न होने पाये, ऐसा तो प्रायः असम्भव ही है; क्योंकि पुलिस व न्यायाधीश द्वारा अपराधी को दण्ड देना उनका कर्तव्य है, युद्ध के मैदान में शत्रु पक्ष के सैनिकों पर प्रहार करना अनिवार्य है ही, अपनी प्राणरक्षा हेतु हिंसक जीवों की हत्या करनी ही पड़ती है। हां, प्रमादवश किसी जीव को हानि पहुँचाना, बदले की भावना से, अपने किसी स्वार्थ की सिद्धि के उद्देश्य से, क्रोध, द्वेष अथवा मत्सर के कारण किसी भी जीव को किसी प्रकार भी कष्ट पहुँचाना अवश्य ही हिंसा है। इस प्रकार की हिंसा से स्वयं को बचाकर रखना तप की श्रेणी में आता है।

उपरोक्त कार्य करते हुए अपने शरीर को तपाना या अन्य प्रकार से कष्ट पहुँचाना अथवा हर खुशी से स्वयं को वंचित रखने को गीता में तप नहीं कहा गया है, वरन् ईश प्रदत्त साधनों का सही दिशा में अपने वर्ण और आश्रम के अनुसार सदुपयोग करते हुए **सर्वजनहिताय** अपने कर्तव्य का पालन करने को तप कहा गया है।

2. वाणी का तप

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वांग्मयं तप उच्यते॥

वाणी शरीर का एक अत्यन्त शक्तिशाली और महत्वपूर्ण अंग है जिससे व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता, मानसिक अनुशासन व शारीरिक संयम का परिचय मिलता है। मनुष्य की समस्त इन्द्रियों में सर्वाधिक उपयोग में आने वाली और सर्वाधिक शक्तिशाली इन्द्रिय वाणी ही है। अतः इस शक्ति का संवरण करते हुए सावधानी से इसका सदुपयोग करना ही वाणी का तप है। महात्मा गाँधी कहा करते थे कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही है तो कम-से-कम बोलो। एक शब्द से ही काम चल जाय तो दो न बोलो। कार्ल इल ने कहा है – मौन में शब्दों की अपेक्षा अधिक वाक्शक्ति होती है।

वाणी का उपयोग शास्त्र पढ़ने में, प्रेम और सहानुभूति व्यक्त करने में करना चाहिए। व्यर्थ की बातों से शक्ति का ह्रास होता है। सत्य और मधुर वाणी से असम्भव भी सम्भव हो जाता है। यदि सत्य और प्रिय में से एक का चयन करना पड़े तो प्रिय को वरीयता देना श्रेष्ठ है। सन्त कबीर ने कहा है –

कागा काको धन हरै, कोयल काको देत।
मीठा शब्द सुनाय के, जग अपनो करि लेत॥

तथा

ऐसी वाणी बोलिये मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करे आपहु शीतल होय॥

वाणी की मधुरता से मनुष्य शत्रु को मित्र बना सकता है, दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित कर सकता है। कम बोलने वाले व्यक्ति का एक-एक शब्द मूल्यवान होता है। उसकी बात को लोग ध्यान से सुनते हैं।

जिसकी वाणी मधुर हो, सत्य हो, दूसरों को उत्तेजित करने वाली न हो, जो बिना आवश्यकता के वाणी का प्रयोग न करता हो अर्थात् मितभाषी हो, जिसकी वाणी से सबका हित होता हो, जिसकी वाणी को शास्त्र पढ़ने का अभ्यास हो, ऐसे व्यक्ति को कलियुग में तपस्वी समझना चाहिए। सन्त तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है –

जो नहिं करहि राम गुन गाना।
जीह सो दादुर जीह समाना॥

क्रोध की अभिव्यक्ति भी वाणी के माध्यम से होती है। यदि क्रोध को वश में करना है तो वाणी पर लगाम कसना आवश्यक है क्योंकि एक बार जो शब्द मुख से निकल गया वह वापस नहीं लिया जा सकता चाहे कितना भी पश्चात्ताप कर लें या क्षमा प्रार्थना कर लें। इसलिये बोलने से पहले तोलना आवश्यक है। यही वाणी का तप है।

3. मन का तप

मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते॥

मनः प्रसादः अर्थात् मन की प्रसन्नता। मन से प्रसन्न वही हो सकता है जो ऐषणाओं से रहित हो, अपने आप में सन्तुष्ट हो और किसी से कोई अपेक्षा न रखता हो। शान्तभाव अर्थात् हर्ष, अमर्ष और कामनाओं से विचलित न हो, जिसका अन्य विषयों का चिन्तन करने के स्थान पर भगवान् का या आत्मचिन्तन करते रहने का स्वभाव बन गया हो, जिसने काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मत्सर आदि विकारों से अपने मन का निग्रह कर लिया है और जिसके भाव पूर्णतः पवित्र रहते हैं अर्थात् किसी के भी प्रति राग, द्वेष, प्रतिस्पर्धा, घृणा आदि से रहित हैं। यदि किसी के भी प्रति द्वेष का भाव मन में आता है तो **भावसंशुद्धि** नहीं हुई क्योंकि मन के भाव बिना कहे ही दूसरे व्यक्ति तक पहुँच जाते हैं। यह कार्य अति कठिन है क्योंकि जो व्यक्ति हमारे साथ शत्रुता का व्यवहार करता है उस के प्रति घृणा के स्थान पर प्रेम का भाव रखना लगभग असम्भव लगता है। गुरु महाराज ने कहा है कि साधक को

यह देहरी तो लाँघनी ही होगी। किन्तु कैसे? इसके लिये यह भाव प्रबल करना होगा कि जो दूसरा कर रहा है वह मैं क्यों करूँ। वह 'वह' है और मैं 'मैं' हूँ। मैं उस जैसा क्यों बनूँ ? उसने दुर्व्यवहार किया है या कुछ गलत किया है तो यह उसकी देनदारी है। मेरा स्वभाव तो सब से प्रेम करने का है, उसके दुर्व्यवहार का उत्तर भी प्रेम से दूँगा। अपना स्वभाव ऐसा बनाने के लिये भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिए।

इन सब गुणों को स्वयं में विकसित करना मन सम्बन्धी तप कहा जाता है।

इस प्रसंग में यह जानना भी आवश्यक है कि तप हमेशा सात्त्विक ही नहीं होता, राजसिक या तामसिक भी हो सकता है। तप किसी भी प्रकार का हो – शरीर का हो, वाणी का हो अथवा मन का हो, वह सात्त्विक तभी होता है जब श्रद्धा पूर्वक किया जाये और बिना फल की इच्छा के किया जाये। यदि फल की इच्छा से किया गया हो अथवा प्रत्युपकार की आशा से किया गया हो तो वह राजसिक तप की श्रेणी में आयेगा, और यदि दूसरे का अनिष्ट करने की इच्छा से किया गया हो तो वह तप तामसिक कहलायेगा जैसे रावण, कुम्भकर्ण, मेघनाथ, हिरण्यकश्यप आदि ने किया था।

इस प्रकार मन, वाणी व शरीर से सात्त्विक तप करके मनुष्य सांसारिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए भी अपने अभीष्ट को पा सकता है।

– रमेश चन्द्र गुप्त 'विनीत'

❖ ❖ ❖

मनुष्य की वाणी ही सर्वशक्तिशाली है

दो भाइयों में बहस छिड़ गई कि दुनिया में सबसे शक्तिशाली क्या है? अपनी समस्या का निराकरण कराने वे अपने पिता के पास पहुँचे। सब सुनकर पिता जी बोले – 'दोनों बिलकुल गधे हो! फालतू की बातों में अपना और मेरा समय जाया कर रहे हो।' अपना अपमान सुन दोनों तिलमिलाये, पर मर्यादावश कुछ बोल नहीं पाये।

थोड़े समय के पश्चात पिता जी पुनः बोले – 'तुम दोनों कितने बुद्धिमान हो। अपना खाली समय जीवन के गूढ़ विषयों के प्रतिपादन में गुजारते हो। मुझे तुम पर बड़ा गर्व है।' अपनी प्रशंसा सुन दोनों के चेहरे खिल उठे। यह देख उनके पिता जी बोले – 'पुत्रो! दुनिया में सबसे शक्तिशाली मनुष्य की वाणी है। यह बिना हथियार उठाये क्रान्ति करा सकती है और बिना परिश्रम करे शान्ति भी। जीवन में इसका हमेशा सदुपयोग करना।'

स्वकल्याणी बनाम परकल्याणी

एक व्यक्ति था। बहुत ही धार्मिक। हमेशा प्रभु भक्ति में लीन रहता था। दिन-रात के 24 घण्टों में 18 घण्टे भगवद्नाम रटन में ही निकालता। समय बीता, व्यक्ति वृद्ध हो गया। उस व्यक्ति के प्राण छूटे। वह प्रभु के धाम गया, प्रभु ने उसे स्वर्ग में स्थान दिया। स्वर्ग में एक दिन प्रभु श्री नारायण सभी स्वर्गवासियों को पुरस्कार देने आये।

प्रभु के पास बहुत से पुरस्कार थे। कई लोग मलीन व गरीब लग रहे थे, लेकिन वह व्यक्ति बहुत ही शालीन और साफ-स्वच्छ नज़र आ रहा था। प्रभु उनके करीब आये, उनके पास खड़े एक मलीन व्यक्ति को हीरे से जड़ित मुकुट पहनाया। फिर आगे बढ़े और उस व्यक्ति को सोने का मुकुट तथा उसके आगे वाले व्यक्ति को रत्न जड़ित मुकुट पहना दिया।

उस व्यक्ति के मन में क्षोभ-भाव आ गये और भगवान से पूछ बैठा – प्रभु! पृथ्वी लोक में तो अन्याय देखा ही, परन्तु अन्याय तो स्वर्ग में भी है।

प्रभु ने पूछा कैसे?

उस व्यक्ति ने कहा – प्रभु इस मलीन व्यक्ति को तो हीरे का मुकुट और मुझ प्रभु भक्त को, जिसने पल-पल आपको भजा, उसे मात्र सोने का मुकुट क्यों?

प्रभु श्रीनारायण ने कहा – आपने केवल अपने कल्याण के लिए मुझे भजा। किसी और की सेवा नहीं की। परन्तु मलीन व गरीब दिखने वाले इस व्यक्ति ने हजारों गरीब, जरूरतमन्दों की सहायता की। इसलिए उसने परकल्याण करके मुझे प्रसन्न किया। मैं स्वकल्याणी की अपेक्षा परकल्याणी को अधिक स्नेह करता हूँ।

हमें इस कहानी से यह शिक्षा लेनी चाहिए कि स्व-कल्याण ज़रूर करें, परन्तु परकल्याण के कार्य जैसे अनाथों की सेवा, बीमारों की चिकित्सा, वृद्धों को सहारा, दिव्यांगों की सहायता, वृद्ध एवं विधवा माताओं व भूखों को भोजन, प्यासों को पानी और भटके लोगों को रास्ता दिखाने का कार्य करके प्रभु के चहेते बनने का प्रयास करना चाहिए।

मनुष्य जीवन में सेवा कार्य करना बहुत ही विशेष कार्य है। सेवा से जीवन में सुख-समृद्धि और सार्थक चमत्कार होते हैं।

19.08.23 से 15.11.23 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची

साधकगण अपने दान की राशि चैक द्वारा निम्नलिखित बैंक खातों में जमा करवा सकते हैं।

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
BANK OF INDIA,
Haridwar
A/c No.: 721010110003147
I.F.S. Code: BKID0007210

Swami Ramanand Sadhna Pariwar
HDFC BANK,
Bhoopatwala, Saptrishi Chungi, Haridwar
A/c No.: 50100537193693
I.F.S. Code: HDFC0005481

साधना धाम का PAN नम्बर AAKAS8917M है।

कृपा करके जमा करवाई हुई राशि का विवरण एवं अपना नाम और पता तथा PAN या आधार कार्ड नम्बर, पत्र, फोन, E-mail अथवा WhatsApp द्वारा साधना धाम कार्यालय में अवश्य सूचित करें। जिससे आपको रसीद आसानी से प्राप्त हो जायेगी।

– **रवि कान्त भण्डारी,** प्रबन्धक, साधना धाम, मोबाइल: 09872574514, 08273494285

1.	अनूप गुप्ता, गुरुग्राम	150000	
2.	एस.एम. इण्डस्ट्रीज, कानपुर	102100	
3.	चन्द्र प्रकाश गुप्ता, बरेली	101111	
4.	मोहित मित्तल, बीसलपुर	101000	
5.	हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	100000	
6.	आविष्कार मेहरोत्रा, गुरुग्राम	100000	
7.	अजय अग्रवाल पुत्र स्व. सुरेन्द्र कुमार अग्रवाल, नई दिल्ली	100000	
8.	निवि गर्ग पुत्र सुरेन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर	100000	
9.	राधा पत्नी सुरेन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर	100000	
10.	सुरेन्द्र अग्रवाल, बीसलपुर	100000	
11.	उषा अग्रवाल, पीलीभीत	51000	
12.	उषा पत्नी रमेश चन्द्र गुप्त, गाजियाबाद	51000	
13.	शिखा गुप्ता, नई दिल्ली	50000	
14.	साधना परिवार/ पुरिन्दर तिवारी, अहमदाबाद	25000	
15.	प्रभा भल्ला	21000	
16.	ऑनलाइन	21000	
17.	जेनी मेहरोत्रा, गुरुग्राम	17200	
18.	सुनीति देवी, पीलीभीत	11000	
19.	विजय कुमार कंसल, बरेली	11000	
20.	दिनेश बहल, गुरुग्राम	11000	
21.	आभा टण्डन, नई दिल्ली	10000	
22.	शिव कुमार जयसवाल, कानपुर	10000	
23	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100	
24.	अशोक कुमार शर्मा, लखनऊ	5100	
25.	उषा शर्मा/अभिषेक शर्मा, दिल्ली	5100	
26.	अनिल चन्द्र मित्तल, बीसलपुर	5100	
27.	महेश चन्द्र अग्रवाल, बरेली	5100	
28.	सुधीर कान्त अग्रवाल, मेरठ	5100	
29.	राम कृपाल कटियार, तिलहर	5100	
30.	मुकेश के. गुप्ता, नई दिल्ली	5100	
31.	सुनीति देवी, पीलीभीत	5100	
32.	अजय आनन्द, गाजियाबाद	5100	
33.	रवि कान्त शुक्ला, देहरादून	5100	
34.	ओम प्रकाश बाली (श्री गिरीश मोहन), हरिद्वार	5100	
35.	संजय अग्रवाल, फरीदाबाद	5100	
36.	नाम्या ऋषि, नई दिल्ली	5100	
37.	संजय अग्रवाल, फरीदाबाद	5100	
38.	पुष्पा अनिल गुप्ता, हरदोई	5100	
39.	सरोज सागर	5100	
40.	अंजनी गुप्ता	5100	

(शेष अगले पृष्ठ पर....)

(19.08.23 से 15.11.23 तक के 2100/- से ऊपर दानदाताओं की सूची पिछले पृष्ठ से ...)

41. सुरेन्द्र अग्रवाल/राधा अग्रवाल, बीसलपुर	5000	58. मीना बिजलवाण, हरिद्वार	2500
42. संजय भरत गुप्ता, बंगलूरू	5000	59. विजय बहल, मेरठ	2500
43. हरपाल सिंह राजपूत, कनखल	5000	60. शशि अग्रवाल, साधना धाम	2500
44. अवधेश कुमार तिवारी, कानपुर	5000	61. गिरीश चन्द्र अग्रवाल, पीलीभीत	2100
45. जेनी मेहरोत्रा, गुरुग्राम	5000	62. डॉ. आकांक्षा अग्रवाल, मेरठ	2100
46. नीलम सिक्का, नई दिल्ली	5000	63. श्रेयांश अग्रवाल, बरेली	2100
47. हरपाल सिंह राजपूत, हरिद्वार	5000	64. अंकुर अग्रवाल, दिल्ली	2100
48. तारेमय यूकेएच22	5000	65. मधु बाला गर्ग, हरिद्वार	2100
49. सुजाता गर्ग, दिल्ली	4200	66. सुमित मिश्रा, नोएडा	2100
50. ए.के. गुप्ता, कानपुर	4000	67. विभा तिवारी, मेरठ	2100
51. विजय कंसल, बरेली	4000	68. सुमित्रा तीरथ, कनखल	2100
52. उषा सराफ, दिल्ली	3100	69. गीता अग्रवाल, बरेली	2100
53. विष्णु अग्रवाल, बरेली	3001	70. नीता सहगल, नई दिल्ली	2100
54. शशि अग्रवाल, हरिद्वार	2500	71. ऑनलाइन	2100
55. साधना रानी, मुरादाबाद	2500	72. विष्णु अग्रवाल, बरेली	2100
56. दीपक अग्रवाल, पीलीभीत	2500	73. नीता सहगल, नई दिल्ली	2100
57. शशि अग्रवाल, साधना धाम	2500	74. नीता सहगल, नई दिल्ली	2100

शोक समाचार

समस्त साधना परिवार को अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि,

1. दिनांक 26 अक्टूबर 2023 को श्रीमती सुरेखा जी (धर्मपत्नी श्री अजय अग्रवाल बरेली वाले) का 61 वर्ष की आयु में हृदय गति रुक जाने के कारण अचानक देहावसान हो गया।
2. दिनांक 4 नवम्बर 2023 को साधक-श्रेष्ठ पूज्य सुरेन्द्र बाबाजी का 86 वर्ष की अवस्था में अमेरिका में देहावसान हो गया। गत कुछ महीनों से वे अस्वस्थ चल रहे थे।
3. दिनांक 5 नवम्बर 2023 को श्रीमती साधना (वरिष्ठ साधक श्री सुरेन्द्र अग्रवाल बीसलपुर वालों की भानजी) का 52 वर्ष की अवस्था में रामपुर में देहावसान हो गया।
4. दिनांक 7 नवम्बर 2023 को श्रीमती शशि (वरिष्ठ साधक श्री सुरेन्द्र अग्रवाल बीसलपुर वालों की बड़ी बहन) का 75 वर्ष की अवस्था में बरेली में हृदय गति रुकने से अचानक देहावसान हो गया।

समस्त साधना परिवार की पूज्य गुरुदेव से विनम्र प्रार्थना है कि इन सभी दिवंगत आत्माओं को अपने श्री चरणों में स्थान प्रदान करें तथा इनके परिवारजनों को इनका वियोग सहने की यथायोग्य शक्ति प्रदान करें। साधना परिवार के सभी साधक भाई-बहन अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं।

श्री स्वामी रामानन्द जी साधना साहित्य

1.	अध्यात्म विकास	इन पुस्तकों में श्री स्वामी जी ने अपनी विकासवादी नवीनतम साधना पद्धति का विस्तार से वर्णन किया है।
2.	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)	
3.	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)	
4.	Evolutionary Outlook on Life	
5.	Evolutionary Spiritualism	
6.	जीवन-रहस्य तथा उत्पादिनी शक्ति	काम शक्ति तथा अध्यात्म विषय पर स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
7.	गीता विमर्श	श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम 7 अध्यायों की स्वामी जी द्वारा विशद् व्याख्या
8.	व्यावहारिक साधना	पूज्य स्वामी जी द्वारा लिखित तीन लेखों – (1) साधकों के लिये, (2) दम्पत्ति के लिये, (3) माता-पिता के प्रति का संकलन
9.	कैलाश-दर्शन	पूज्य स्वामी जी ने कुछ साधकों के साथ कैलाश-पर्वत की यात्रा व परिक्रमा की थी। उस यात्रा का एवं उनकी आत्मानुभूति का विशद् वर्णन
10.	गीतोपनिषद	श्रीमद्भगवद्गीता के आठ से अठारह अध्याय तक स्वर्गीय श्री के.सी. नैयर जी द्वारा व्याख्या
11.	हमारी साधना	श्री पुरुषोत्तम भटनागर द्वारा सम्पादित
12.	हमारी उपासना	
13.	साधना और व्यवहार	
14.	अशान्ति में	
15.	मेरे विचार	
16.	As I Understand	
17.	My Pilgrimage to Kailash	
18.	Sex and Spirituality	जीवन-रहस्य (प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना द्वारा अंग्रेजी में अनुवादित पुस्तकें)
19.	Our Worship	हमारी साधना
20.	Our Spiritual Sadhana Part-I	आध्यात्मिक साधना (प्रथम खण्ड)
21.	Our Spiritual Sadhana Part-II	आध्यात्मिक साधना (द्वितीय खण्ड)
22.	स्वामी रामानन्द-एक आध्यात्मिक यात्रा	स्वस्पष्ट प्रो. डा. लक्ष्मी सक्सेना
23.	पत्र-पीयूष	कु. शीला गौहरी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के पत्रों का संकलन
24.	स्वामी रामानन्द-चरित सुधा	स्व. डा. कविराज नरेन्द्र कुमार एवम् वैद्य श्री सत्यदेव
25.	स्वामी रामानन्द-वचनामृत	श्री जगदीश प्रसाद द्विवेदी द्वारा गुरुदेव की पुस्तकों से संकलन
26.	मेरी दक्षिण भारत-यात्रा	पूज्य सुमित्रा माँ जी द्वारा दक्षिण भारत यात्रा का रोचक वर्णन
27.	पत्तियाँ और फूल	भजन, पद, कीर्तन, आरती आदि का संकलन
28.	दैनिक आवाहन विधि	स्वामी जी की साधना प्रणाली पर आधारित – श्रीमती महेश प्रकाश
29.	Letters to Seekers	कु. शीला गौहरी एवं श्री विजय भण्डारी द्वारा साधकों के नाम स्वामी जी के अंग्रेजी पत्रों का संकलन
30.	आत्मा की ओर	
31.	जीवन विकास – एक दृष्टि	Evolutionary Outlook on Life का हिन्दी अनुवाद
32.	विकासात्मक अध्यात्म	Evolutionary Spiritualism का हिन्दी अनुवाद
33.	गुरु के प्रति निष्ठा	तेजेन्द्र प्रताप सिंह
34.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 1)	अनाम साधिका
35.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 2)	
36.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 3)	
37.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 4)	
38.	माँ की विभूति – भक्ति रस (भाग 5)	
39.	श्रीराम भजन माला	श्री सूर्य प्रसाद शुक्ल 'राम सरन'
40.	माँ का भाव भरा प्रसाद गुरु का दिव्य प्रसाद	मीरा गुप्ता
41.	पत्र-पीयूष सार	पत्र-पीयूष का संग्रहीत संस्करण
42.	गीता पाठ	
43.	गृहस्थ और साधना	
44.	प्रभु दर्शन	
45.	प्रभु प्रसाद मिले तो	
46.	गीता प्रवेशिका	हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी में गीता का संग्रहीत संस्करण – रमेश चन्द्र गुप्त

दिसम्बर 2023 में साधना-धाम में होने वाले कार्यक्रम

माँ सुमित्रा जी का निर्वाण दिवस व जन्म दिवस

6 दिसम्बर 2023 को प्रातः 10 बजे रामायण-पाठ प्रारम्भ होगा।

7 दिसम्बर 2023 को माँ सुमित्रा जी का निर्वाण दिवस है, अतः प्रातः जाप के पश्चात् गंगा के पावन तट पर माँ जी को श्रद्धांजलि अर्पित की जायेगी। प्रातः 10 बजे रामायण-पाठ की पूर्ति होगी। दोपहर 12 बजे भण्डारा होगा जिसमें ब्राह्मणियों को भोजन कराकर दक्षिणा दी जायेगी। तत्पश्चात् प्रीतिभोज होगा।

8 से 14 दिसम्बर 2023 तक प्रतिदिन अखण्ड जाप होगा।

14 दिसम्बर 2023 को माँ सुमित्रा जी का जन्म दिवस मनाया जायेगा एवं प्रसाद वितरण होगा।

पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी का जन्म दिवस साधना शिविर

14 दिसम्बर 2023 को प्रातः 9 बजे से रामायण-पाठ प्रारम्भ होगा।

15 दिसम्बर 2023 को अपराह्न रामायण-पाठ की पूर्ति होगी। सायं 6 बजे अखण्ड जाप प्रारम्भ होगा।

16 दिसम्बर 2023, शनिवार

सामूहिक जाप	प्रातः 05.30 बजे
हवन	प्रातः 09.00 बजे
ब्रह्मभोज	मध्याह्न 12.00 बजे
प्रकटोत्सव	अपराह्न 02.00 से 04.00 बजे
भजन सन्ध्या	सायं 06.00 से रात्रि 09.00 बजे
प्रीतिभोज	रात्रि 09.00 बजे

17 दिसम्बर 2023, रविवार

सामूहिक जाप	प्रातः 05.30 बजे
स्वामी जी के संस्मरण एवं अनुभूतियाँ	प्रातः 09.30 बजे

18 से 21 दिसम्बर 2023 - तीन रात्रि का जन्म दिवस साधना शिविर।

साधना परिवार की कार्यकारिणी की बैठक 17 दिसम्बर 2023 को साधना-धाम के कार्यालय में होगी। एजेण्डा उसी समय प्रस्तुत किया जायेगा।

नववर्ष का स्वागत कार्यक्रम

31 दिसम्बर 2023 रात्रि 12 बजे विशेष कार्यक्रम में नववर्ष का स्वागत एवं पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त किया जायेगा। कृपया इस कार्यक्रम में भाग लेकर आने वाले नव वर्ष के लिये शुभाशीर्वाद प्राप्त करें।

स्वामी रामानन्द तपस्थली - दिगोली

तपस्थली के मन्दिर की झाँकी

तपस्थली के बाहर का दृश्य

स्वामी रामानन्द तपस्थली, जिसका नाम पहले दिगोली कुटिया था, से सभी साधक भलीभांति परिचित हैं। विगत दो वर्ष में अध्यक्ष जी की पहल पर इस स्थान का कायापलट हो गया है। साधना मन्दिर सहित समस्त परिसर का नवीनीकरण और विस्तार किया गया है। अतिरिक्त भूमि लेकर नये रसोईघर व भोजनालय का निर्माण किया गया है और उसके ऊपर साधकों के आवास के लिये एक बड़े हॉल का निर्माण किया गया है। अतिरिक्त शौचालय व स्नानागार बनाये गये हैं। कुल मिलाकर यह स्थान अब लम्बे समय तक साधना करने के इच्छुक साधकों के लिए पूर्णत: उपयुक्त है।

यह वह स्थली है जिसको गुरु महाराज ने तपस्या के लिये चुना था और लगभग छ: माह तक स्थानीय निवासियों को श्रीमद्भागवत की कथा सुनाई थी। अत: यह स्थान हम साधकों के लिये किसी तीर्थ से कम नहीं है। अब हमारा पावन कर्तव्य है कि अन्य केन्द्रों के साथ-साथ तपस्थली पर भी गुरुदेव के जन्म-महोत्सव का आयोजन किया जाये। इसी बात को ध्यान में रखकर इस वर्ष तपस्थली पर दिसम्बर माह में निम्नलिखित कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया गया है –

दिनांक 16 दिसम्बर, 2023

प्रात: 9:00 से 11:00	सुन्दर काण्ड पाठ
दोपहर 12:00 से 1:00	ब्रह्म भोज तथा भोजन प्रसाद
अपराह्न 2:00 से 4:00	जन्मोत्सव (बधाइयाँ)
सायं 6:00 से 7:00	जाप
रात्रि 8:00 से 8:30	रात्रि भोज
रात्रि 8:30 से 9:30	संस्मरण

दिनांक 17 दिसम्बर, 2023

प्रात: 6:00 से 10:30	अखण्ड जाप एवं पूर्ति

साधकों से नम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में तपस्थली पहुँच कर समारोह की शोभा बढ़ायें। जो साधक जन्म दिवस समारोह में सम्मिलित होना चाहते हों वे कृपया एक सप्ताह पूर्व श्री विष्णु कुमार जी गोयल को नीचे दिये गये नम्बरों पर सूचित करने की कृपा करें –

8171700880 अथवा 8279491550

राम राम जी

आओ 16 दिसम्बर 2023 शनिवार को साधना धाम में

पूज्य गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी का जन्म दिवस

सब मिलकर हर्षोल्लास के साथ मनायें ।

सभी साधकों से प्रार्थना है कि अपने व्यस्त जीवन से दो दिन का समय निकालकर परिवार सहित आकर इस उत्सव का आनन्द उठायें और स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त करें ।